खण्ड-'क' अपठित अवबोधनम्

अध्याय - 1 अपठित गद्यांशः

स्मरणीय बिन्दु

1. सर्वप्रथम अपठित अनुच्छेद को दो-तीन बार अच्छी तरह पढ़ना चाहिए, क्योंकि अनुच्छेदों को पढ़ने से ही उनका अभिप्राय स्पष्ट होता है।
2. पढ़ने के पश्चात् अनुच्छेदों के प्रश्नों का ज्ञान भी आवश्यक है। प्रश्नों के ज्ञान के पश्चात् ही उनके उत्तर लिखने चाहिए।
3. अनुच्छेद में दिए गए अव्ययों, विभक्तियों और प्रत्ययों को विशेष ध्यान से पढ़ें, क्योंकि इनका अर्थ पता न होने से उत्तर प्रायः अशुद्ध हो सकता है।
4. 'उचित शीर्षक' देने के लिए विद्यार्थी को अनुच्छेद पूरा पढ़कर और सोचकर छोटा और सारयुक्त शीर्षक चुनना चाहिए जिसमें अनुच्छेद का पूरा भाव निहित हो। ❑❑

खण्ड-'ख' रचनात्मकं कार्यम्

अध्याय - 2 पत्रं व अनुच्छेद-लेखनम्

(1) पत्रलेखनम् (हिन्दी/आङ्ग्लभाषातः संस्कृतेन अनुवादः)

स्मरणीय बिन्दु

1. संस्कृत भाषा में पत्र रिक्त स्थानों के रूप में होते हैं, इसलिए सर्वप्रथम पत्र के विषय का स्पष्टीकरण आवश्यक है। पत्र किसके लिए लिखा जा रहा है, इसका ज्ञान होना भी आवश्यक है।
2. विषय के स्पष्टीकरण के लिए पत्र को बार-बार पढ़ना अनिवार्य है।
3. मञ्जूषा में दिए हुए शब्दों का भी अर्थ करना चाहिए, उसके पश्चात् दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करनी चाहिए।
4. रिक्त स्थानों की पूर्ति के पश्चात् भी पत्र को पढ़ना अनिवार्य है।

(2) चित्राधारितम् वर्णनम् अथवा अनुच्छेद-लेखनम्

स्मरणीय बिन्दु

चित्रवर्णनम्

अत्र छात्रेभ्यः संक्षिप्तवाक्यरचना अपेक्षिता वर्तते। केवलं वाक्यशुद्धिः द्रष्टव्या।

अस्य प्रश्नस्य प्रमुखम् उद्देश्यं वाक्यरचना अस्ति। वाक्यं दीर्घम् अस्ति अथवा लघुः इति महत्त्वपूर्णं नास्ति। प्रतिवाक्यम् एकः अङ्कः भावस्य कृते एकः अङ्कः च व्याकरणादृष्टया शुद्धतानिमित्तं निर्धारितः अस्ति। मञ्जूषायां प्रदत्ताः शब्दाः सहायतार्थं सन्ति। छात्रः तेषां वाक्येषु प्रयोगं कुर्यादेव इति अनिवार्यं नास्ति। छात्रः स्वमेधया अपि वाक्यानि निर्मातुं शक्नोति। मञ्जूषायां प्रदात्तानां शब्दानां विभक्ति-परिवृत्य अपि वाक्यनिर्माणं शक्यते।

चित्रवर्णनम्

बच्चों से सरल, संक्षिप्त वाक्य पूर्ति अपेक्षित है। केवल वाक्य की शुद्धता देखी जाए। इस प्रश्न का प्रमुख उद्देश्य रचना है। वाक्य लघु अथवा दीर्घ हो यह महत्वपूर्ण नहीं। प्रतिवाक्य एक अंक भाव के लिए और एक अंक व्याकरण की दृष्टि से शुद्धता के लिए है। मंजूषा में दिए शब्द सहायतार्थ हैं। बच्चे उनमें से शब्द चुनें अथवा नहीं-आवश्यक नहीं। वे स्वयं शब्दों का प्रयोग कर वाक्य-निर्माण कर सकते हैं। बच्चे स्वयं भी मंजूषा में दिए गए शब्दों की विभिक्तियाँ आदि भी बदल सकते हैं अत: अंक दिए जाएँ।

अथवा

अनुच्छेदलेखनम्

अयं विकल्प: सर्वेभ्य: अस्ति। छात्रा: मञ्जूषायां प्रदत्तानां शब्दानां विभक्ति परिवृत्य अपि वाक्यनिर्माणं कर्तुं शन्कुवन्ति। अत: अङ्का: देया:। अस्मै प्रश्नाय अपि 5 अङ्का: निर्धारिता: सन्ति। प्रत्येकं वाक्यनिमित्तम् अङ्कद्वयम् इति।

अनुच्छेदलेखनम्

यह विकल्प सबके लिए दिया गया है। बच्चे स्वयं भी मंजूषा में दिए गए शब्दों की विभिक्तियाँ आदि बदल सकते हैं। अंक दिए जाएँ। इस प्रश्न के 5 अंक हैं। प्रत्येक वाक्य के लिए 1 अंक हैं।

(3) हिन्दी/ आङ्गलभाषात: संस्कृतेन अनुवाद:

स्मरणीय बिन्दु

हिन्दीभाषया संस्कृत भाषायां अनुवादं आङ्ग्ल भाषया संस्कृत भाषायां वा अनुवादं करणम्—

एकस्या: भाषाया: शब्दार्थं अपर: भाषाया: शब्दार्थे प्रकटं करणं अनुवाद: कथ्यते। हिन्दी भाषाया: संस्कृत भाषायाम् अनुवादं कर्तुम् व्याकरण नियमानुसार क्रिया सदैव कर्त्ताया: अनुसारं प्रयुज्यते। कर्त्ता यस्य पुरुषस्य यस्य वचनस्य च भवति, क्रिया अपि तस्य पुरुषस्य, वचन भवति। अनुवादं कर्तुम् सरल पर्याय शब्दानां प्रयोगं कुर्यात्। प्रत्येक वाक्यनिमित्तम् एकम् अंकम् अस्ति।

हिन्दी भाषा से संस्कृत भाषा में अनुवाद अथवा आङ्ग्ल भाषा से संस्कृत भाषा में अनुवाद करना।

एक भाषा के शब्दार्थ को दूसरी भाषा के शब्दार्थ में प्रकट करना अनुवाद कहा जाता है। हिन्दी भाषा से संस्कृत भाषा में अनुवाद करने के लिए क्रिया सदा कर्त्ता के अनुसार ही प्रयोग की जाती है। कर्त्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होता है, क्रिया भी उसी पुरुष या वचन की होती है। प्रत्येक वाक्य के लिए 1 अंक है। अनुवाद करने के लिए सरल पर्याय शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

❑❑

खण्ड-'ग' अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

अध्याय - 1 सन्धि-कार्यम्

स्मरणीय बिन्दु

सन्धि (पर:सन्निकर्ष: संहिता)—

सन्धि का अर्थ है—मेल अर्थात् अत्यन्त समीपवर्ती दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं। यथा-विद्यालय: = विद्या + आलय:। इस उदाहरण में आ + आ इन वर्णों का मेल होकर एक 'आ' रूप बना, तो यही सन्धि है।

अन्य उदाहरण—

पौ + अकः = पावकः। शिव + छाया = शिवच्छाया।

(i) सन्धि के परिवर्तन में कहीं पर दो अक्षरों के स्थान पर नया अक्षर आ जाता है; जैसे—

रमा + ईशः = रमेशः।

(ii) कहीं पर अक्षर अथवा विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे—छात्राः + गच्छन्ति = छात्रा गच्छन्ति

(iii) कहीं पर दो अक्षरों के बीच में एक नया अक्षर आ जाता है; जैसे—धावन् + अश्वः = धावन्नश्वः।

सन्धियों के भेद—जिन दो व्यवधान रहित वर्णों में हम सन्धि करते हैं, वे वर्ण प्रायः अच् (स्वर) और हल् (व्यञ्जन) होते हैं। कभी-कभी पहला विसर्ग और दूसरा स्वर या व्यञ्जन हो सकता है। इसलिए सन्धियों के प्रधान रूप से निम्नलिखित भेद हैं—

(1) अच् सन्धि (स्वर सन्धि) (2) हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि) (3) विसर्ग सन्धि

(1) अच् (स्वर) सन्धि (Vowel Joining)

स्वरों का स्वरों के साथ होने वाले परिवर्तन या विकार को स्वर सन्धि कहते हैं; जैसे—भो + अति = भवति। राम + आयनम् = रामायणम्। स्वर वर्णों में होने वाले परिवर्तन की विभिन्नता के कारण स्वर-सन्धि के निम्न छः भेद हैं—(i) दीर्घ सन्धि (ii) गुण सन्धि (iii) वृद्धि सन्धि (iv) यण् सन्धि (v) अयादि सन्धि (vi) पूर्वरूप सन्धि।

1. दीर्घ सन्धि (अकः सवर्णे दीर्घः)

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ अथवा ऋ से परे सवर्ण ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ अथवा ऋ होने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ वर्ण हो जाता है।

नियम—(क) अ या आ के बाद अ या आ होने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ 'आ' हो जाता है; जैसे—

	सन्धि विच्छेद :		सन्धिः	नियम
1.	मृग + अङ्कः	=	मृगाङ्कः	(अ + अ = आ)
2.	सुख + अर्थी	=	सुखार्थी	(अ + अ = आ)
3.	मुरा + अरिः	=	मुरारिः	(आ + अ = आ)
4.	कदा + अपि	=	कदापि	(आ + अ = आ)
5.	धन + आदेशः	=	धनादेशः	(अ + आ = आ)
6.	विद्या + आतुरः	=	विद्यातुरः	(आ + आ = आ)

नियम—(ख) इ या ई के बाद 'इ' या 'ई' होने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ 'ई' हो जाता है; जैसे—

	सन्धि विच्छेदः		सन्धिः	नियम
1.	कवि + इन्द्रः	=	कवीन्द्रः	(इ + इ = इ4)
2.	अधि + इत्य	=	अधीत्य	(इ + इ = ई)
3.	मुनि + ईशः	=	मुनीशः	(इ + ई = ई)
4.	श्री + ईशः	=	श्रीशः	(ई + ई = ई)
5.	नदी + ईश्वरः	=	नदीश्वरः	(ई + ई = ई)
6.	मही + इन्द्रः	=	महीन्द्रः	(ई + इ = ई)

नियम—(ग) उ या ऊ के बाद 'उ' या 'ऊ' होने पर दोनों के स्थान में दीर्घ 'ऊ' हो जाता है; जैसे—

	सन्धि विच्छेदः		सन्धिः	नियम
1.	भानु + उदयः	=	भानूदयः	(उ + उ = ऊ)
2.	गुरु + उपदेशः	=	गुरूपदेशः	(उ + उ = ऊ)
3.	लघु + ऊर्मिः	=	लघूर्मिः	(उ + ऊ = ऊ)
4.	सु + उक्तिः	=	सूक्तिः	(उ + उ = ऊ)

5.	लघु + उपदेशः	=	लघूपदेशः	(उ + उ = ऊ)
6.	सिन्धु + ऊर्मिः	=	सिन्धूर्मिः	(उ + ऊ = ऊ)

नियम–(घ) ऋ के बाद 'ऋ' होने पर ऋ के स्थान पर दीर्घ 'ॠ' हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	मातृ + ऋणम्	=	मातॄणम्	(ऋ + ऋ = ॠ)
2.	पितृ + ऋद्धिः	=	पितॄद्धिः	(ऋ + ऋ = ॠ)
3.	होतृ + ऋकारः	=	होतॄकारः	(ऋ + ऋ = ॠ)

2. गुण सन्धि (आद्गुणः)

संस्कृत व्याकरण के अनुसार ए, ओ, अर्, अल् की गुण संज्ञा होती है। यदि अ, आ के बाद इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ इनमें से कोई वर्ण हो तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर्, तथा अल् हो जाते हैं।

नियम–(क) अ, आ के पश्चात् इ, ई होने पर दोनों के स्थान पर 'ए' गुण हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	नर + इन्द्रः	=	नरेन्द्रः	(अ + इ = ए)
2.	लता + इव	=	लतेव	(आ + इ = ए)
3.	उमा + ईशः	=	उमेशः	(आ + ई = ए)
4.	नर + ईशः	=	नरेशः	(अ + ई = ए)

नियम–(ख) अ, आ के पश्चात् उ, ऊ होने पर दोनों के स्थान पर 'ओ' गुण हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	सूर्य + उदयः	=	सूर्योदयः	(अ + उ = ओ)
2.	पर + उपकारः	=	परोपकारः	(अ + उ = ओ)
3.	वेद + उक्तिः	=	वेदोक्तिः	(अ + उ = ओ)
4.	न + उचितम्	=	नोचितम्	(अ + उ = ओ)

नियम–(ग) अ, आ के बाद ऋ होने पर ऋ वर्णों के स्थान पर 'अर्' गुण हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
	कृष्ण + ऋद्धि	=	कृष्णर्द्धि	(अ + ऋ = अर्)
	देव + ऋषिः	=	देवर्षिः	(अ + ऋ = अर्)

नियम–(घ) अ, आ के बाद ऌ होने पर दोनों वर्णों के स्थान पर 'अल्' गुण हो जाता है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
	तव + ऌकारः	=	तवल्कारः	(अ + ऌ = अल्)
	मम + ऌकारः	=	ममल्कारः	(अ + ऌ = अल्)

3. वृद्धि सन्धि (वृद्धि रेचि)

यदि अ, आ के बाद ए, ऐ आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' तथा ओ, औ आए तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

नियम–(क) अ, आ के बाद ए, ऐ, हो तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' वृद्धि हो जाती है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	कृष्ण + एकत्वम्	=	कृष्णैकत्वम्	(अ + ए = ऐ)
2.	तस्य + एव	=	तस्यैव	(अ + ए = ऐ)
3.	सदा + एव	=	सदैव	(आ + ए = ऐ)

नियम–(ख) अ, आ के बाद ओ, औ के होने पर दोनों वर्णों के स्थान पर 'औ' वृद्धि होती है; जैसे–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	जल + ओघः	=	जलौघः	(अ + ओ = औ)
2.	महा + औषधिः	=	महौषधिः	(आ + औ = औ)
3.	वन + औषधि	=	वनौषधिः	(अ + औ = औ)

4. यण् सन्धि–(इको यणचि)

यदि इक् (इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ) के बाद कोई असमान स्वर हो, तो उसका 'यण्' अर्थात् क्रमशः इ/ई का 'य्', उ/ऊ का 'व्', ऋ/ ॠ का 'र्' और 'ऌ' का 'ल्' हो जाता है।

1. (य्) 'इ' या 'ई' के बाद असमान स्वर होने पर इ/ई का 'य्' हो जाता है, जैसे– यदि + अपि = यद्यपि, नदी + अत्र = नद्यत्र।
2. (व्) 'उ' या 'ऊ' के बाद असमान स्वर आने पर उ/ऊ का 'व्' हो जाता है, जैसे– मधु + अरिः = मध्वरिः, अनुः + अयः = अन्वयः।
3. (र्) 'ऋ' या 'ॠ' के बाद असमान स्वर आने पर 'ऋ/ ॠ' का 'र' हो जाता है, जैसे–धातृ + अंश = धात्रंशः, भ्रातृ + अंशः = भ्रात्रंशः।
4. 'ल्' 'ऌ' के बाद असमान स्वर आने पर 'ऌ' का 'ल्' हो जाता है, जैसे–ऌ + अकारः = लकारः, ऌ + आकृतिः = लाकृतिः।

उदाहरणानि–

	सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**	**नियम**
1.	इति + आदि	=	इत्यादि	इ, ई, को, य्
2.	यदि + अपि	=	यद्यपि	
3.	प्रति + एक	=	प्रत्येक	
4.	अति + आवश्यक	=	अत्यावश्यक	
1.	सु + आगतम्	=	स्वागतम्	उ, ऊ को व्
2.	वधू + आगमनम्	=	वध्वागमनम्	
1.	मातृ + आदेशः	=	मात्रादेशः	ऋ, ॠ को र्
2.	पितृ + आदेशः	=	पित्रादेशः	
1.	ऌ + अकारः	=	लकारः	ऌ को ल्
2.	ऌ + आकृतिः	=	लाकृतिः	

5. अयादि / सन्धिः–(एचोऽयवायावः)

यदि ए, ओ, ऐ, औ के बाद कोई भी (समान या असमान) स्वर आये तो क्रमशः 'ए' का 'अय्' 'ओ' का 'अव्', 'ऐ' का 'आय्', 'औ' का 'आव्' हो जाता है। उदाहरणानि–

अयादि सन्धि बोधक चक्रम्

पूर्ववर्णः	**परवर्णः**	**परिवर्तनम्**	
ए +	स्वरः	ए स्थाने अय्	ए ⟶ अय् + स्वरः
ऐ +	स्वरः	ऐ स्थाने आय्	ऐ ⟶ आय् + स्वरः
ओ +	स्वरः	ओ स्थाने अव्	ओ ⟶ अव् + स्वरः
औ +	स्वरः	औ स्थाने आव्	औ ⟶ आव् + स्वरः

उदाहरणानि–

1. ए + स्वरः = अय् + स्वरः

यथा–ने + अनम् = न् + ए + अनम्
= न् + अय् + अनम् = नयनम्

2. ऐ + स्वरः = आय् + स्वरः

यथा–नै + अकः = न् + ऐ + अकः
= न् + आय् + अकः = नायकः

एवमेव—शे + अनम् = श् + ए + अनम्
= श् + अय् + अनम् = शयनम्

एवमेव— गै + अकः = ग् + ऐ + अकः
= ग् + आय् + अकः = गायकः

3. ओ + स्वरः = अव् + स्वरः

यथा—भो + अनम् = भ् + ओ + अनम्
= भ् + अव् + अनम् = भवनम्

4. औ + स्वरः = आव् + स्वरः

यथा—पौ + अकः = प् + औ + अकः
= प् + आव् + अकः = पावकः

6. पूर्वरूपम् (एङः पदान्तादति)

जब पदान्त में ए, ओ हों तथा उनके पश्चात् अ आए तो पूर्व (पहले वाले) स्वर का ही उच्चारण होता है, बाद वाले अ का रूप अवग्रह (ऽ) चिह्न (अ का उच्चारण रोकने वाला चिह्न) शेष रह जाता है, उसे पूर्वरूप स्वर सन्धि कहते हैं, जैसे-

(अ) जब ए के बाद अ आए तो अ का पूर्वरूप (ऽ) हो जाता है। जैसे-

ए	+	अ	=	एऽ	एते	+	अपि	=	एतेऽपि
ए	+	अ	=	एऽ	हरे	+	अव	=	हरेऽव
ए	+	अ	=	एऽ	हरे	+	अत्र	=	हरेऽत्र
ए	+	अ	=	एऽ	ग्रामे	+	अपि	=	ग्रामेऽपि
ए	+	अ	=	एऽ	रमे	+	अत्र	=	रमेऽत्र
ए	+	अ	=	एऽ	के	+	अपि	=	केऽपि
ए	+	अ	=	एऽ	गते	+	अद्य	=	गतेऽद्य
ए	+	अ	=	एऽ	वने	+	अस्मिन्	=	वनेऽस्मिन्

(ब) जब ओ के बाद अ आए तब भी पूर्व (पहले) वाले ओ का ही रूप बचता है तथा अ का अवग्रह (ऽ) हो जाता है, जैसे

ओ	+	अ	=	ओऽ	विष्णो	+	अत्र	=	विष्णोऽत्र
ओ	+	अ	=	ओऽ	रामो	+	अवदत्	=	रामोऽवदत्
ओ	+	अ	=	ओऽ	शिवो	+	अर्च्यः	=	शिवोऽर्च्यः
ओ	+	अ	=	ओऽ	को	+	अपि	=	कोऽपि
ओ	+	अ	=	ओऽ	कीटो	+	अपि	=	कीटोऽपि
ओ	+	अ	=	ओऽ	कृतज्ञो	+	अस्मि	=	कृतज्ञोऽस्मि
ओ	+	अ	=	ओऽ	प्रथमो	+	अध्यायः	=	प्रथमोऽध्यायः
ओ	+	अ	=	ओऽ	बालो	+	अपि	=	बालोऽपि

(2) व्यञ्जन सन्धि (Consonant Joining)

किसी व्यञ्जन का व्यञ्जन के साथ परिवर्तन होता है तो वह व्यञ्जन सन्धि होती है; जैसे—सत् + जनः = सज्जनः। इस उदाहरण में त् + ज का मेल होने पर प्रथम अक्षर 'त्' के स्थान पर 'ज्' हो गया।

व्यञ्जन संधि के भेद के अन्तर्गत पाठ्यक्रम में निम्नलिखित सन्धियों का अध्ययन अपेक्षित है।

1. परसवर्णः सन्धि (अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः)

नियम—(1) अनुस्वार के बाद यदि (श् ष् स् ह्) को छोड़कर सभी व्यञ्जन हों तो अनुस्वार को परसवर्ण (उत्तरपद का पञ्चम वर्ण) हो जाता है। किसी भी अपदान्त 'न्' 'त्' के स्थान पर होने वाले अनुस्वार के बाद दिए गए वर्ग का कोई वर्ण हो तो अनुस्वार को उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है।

(क) अपदान्त अनुस्वार के बाद 'क' वर्ग होने पर अनुस्वार के स्थान पर 'ङ्' होता है।

उदाहरण—

सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
1. कम् + कणः	=	कङ्कणः
2. अम् + कितः	=	अङ्कितः
3. मृदम् + गः	=	मृदङ्गः

(ख) अपदान्त अनुस्वार के बाद 'च' वर्ग होने पर अनुस्वार के स्थान पर 'ञ्' होता है।

उदाहरण—

सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
अम् + चितः	=	अञ्चितः
चम् + चलः	=	चञ्चलः

(ग) अपदान्त अनुस्वार के बाद 'ट' वर्ग होने पर अनुस्वार के स्थान पर 'ण्' होता है।

उदाहरण—

सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
कम् + टकः	=	कण्टकः
दम् + डः	=	दण्डः

(घ) अपदान्त अनुस्वार के बाद 'त' वर्ग होने पर अनुस्वार के स्थान पर 'न्' होता है।

उदाहरण—

सन्धि विच्छेदः		**सन्धिः**
शाम् + तः	=	शान्तः
कम् + दुकः	=	कन्दुकः

(ङ) अपदान्त अनुस्वार के बाद 'प' वर्ग होने पर अनुस्वार के स्थान पर 'म्' होता है।

गुम् + फितः	=	गुम्फितः
जम् + बु	=	जम्बुः

2. छत्व सन्धि (शश्छोऽटि)

नियम—पदान्त वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ वर्ण के बाद श् हो तो उसका पदान्त 'छ्' हो जाता है यदि उस श् के बाद स्वर ह, य्, व्, र् हो तो 'श्' का 'छ्' होने पर पूर्ववर्ती 'द्' का 'ज्' और 'ज्' का 'च्' यदि पूर्ववर्ती 'त्' हो तो यह 'च्' हो जाता है। यह नियम वैकल्पिक है। जैसे—तत् (तद्) + शिवः = तच्छिवः।

उदाहरण—

(छ होने पर)		('छ' न होने पर)	
तत् + शिला	=	तच्छिला	तच्शिला
सत् + शीलः	=	सच्छीलः	सच्शीलः
एतत् + श्रुत्वाः	=	एतच्छ्रुत्वा	एतच्श्रुत्वा
मत् + शिरः	=	मच्छिरः।	मच्शिरः।

3. तुगागम सन्धि (तुक् = त् = च् का आगम)

नियम (1)—ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' हो तो बीच में (तुक् आगम) 'त्' लग जाता है तथा उस 'त्' का 'च्' हो जाता है।

उदाहरण—

राम + छाया	=	रामच्छाया
स्व + छन्दः	=	स्वच्छन्दः

नियम (2)—दीर्घ स्वर के बाद 'छ' हो तो बीच में (तुक् आगम) 'त्' लगेगा तथा उस 'त्' का 'च्' हो जाएगा।

जैसे—चे + छिद्यते = चेच्छिद्यते

नियम (3)—यदि पद के अन्त में दीर्घ स्वर हो और बाद में 'छ' आए तो विकल्प से (तुक् आगम) 'त्' होगा 'त्' होने पर यह 'च्' हो जाएगा।

उदाहरण—

लक्ष्मी + छाया	=	लक्ष्मीच्छाया
लता + छाया	=	लताच्छाया

नियम (4)—'आ' या 'मा' के बाद 'छ' रहने पर तुक् का आगम होता है तुक् का 'त्' शेष रहने पर 'च्' होगा।

उदाहरण—

आ + छादयति	=	आच्छादयति
मा + छिदत	=	माच्छिदत

4. अनुस्वार सन्धिः (मोऽनुस्वारः)

['म्' का 'अनुस्वार' (ं)] —यदि पहले पद के अन्त में 'म्' आए और उसके बाद कोई भी व्यंजन आए तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है, जैसे—ग्रामम् + याति = ग्रामं याति, पाठम् + पठति = पाठं पठति।

5. जशत्व सन्धि (झलां जशोऽन्ते)

प्रथम पद (शब्द) के अन्त में किसी भी वर्ग के प्रथम वर्ण, (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद द्वितीय पद (शब्द) का पहला वर्ण कोई स्वर अथवा वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवां वर्ण हो अथवा य्, र्, ल्, व्, आये तो प्रथम पद के अन्तिम वर्ण के स्थान पर अपने वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—वागीशः = वाक् + ईशः, अब्जः = अप् + जः, षड्दर्शनम् = षट् + दर्शनम्।

6. प्रथमवर्णस्य पञ्चमवर्णे परिवर्तनम्

यदि वर्ग के पहले वर्ण के बाद किसी भी वर्ग का पंचम वर्ण हो तो प्रथम वर्ण का पाँचवा वर्ण हो जाता है। जैसे—षण्णवतिः = षट् + नवतिः।

(3) विसर्ग सन्धि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन के होने पर विसर्ग में होने वाले परिवर्तन को विसर्ग सन्धि कहा जाता है। जैसे रामः + च = रामश्च।

विसर्ग सन्धि के भेद—पाठ्यक्रम के अनुसार—प्रथम सत्र के लिए उत्व व रत्व सन्धि प्रस्तुत है—

1. उत्व सन्धि

नियम (1)—यदि विसर्ग से पूर्व 'अ' हो तथा बाद में भी 'अ' हो तो विसर्ग सहित पूर्व 'अ' का 'ओ' हो जाता है तथा बाद के 'अ' के स्थान पर अवग्रह 'ऽ' हो जाता है।

उदाहरण—

पुरुषः + अस्ति	=	पुरुषोऽस्ति
कः + अयम्	=	कोऽयम्
प्रथमः + अध्यायः	=	प्रथमोऽध्यायः
एषः + अपि	=	एषोऽपि

नियम (2)—विसर्ग से पूर्व यदि 'अ' हो और बाद में किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा तथा पाँचवाँ वर्ण हो अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई वर्ण हो तो विसर्ग 'अ' का 'ओ' हो जाता है।

उदाहरण—

देवः + गच्छति	=	देवो गच्छति	मनः + हरः	=	मनोहरः
रामः + जयति	=	रामो जयति	यशः + गानम्	=	यशोगानम्
बालकः + लिखति	=	बालको लिखति।			

2. रत्व सन्धि

यदि विसर्ग से पहले अ या आ को छोड़कर और कोई स्वर हो तथा बाद में कोई स्वर का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई वर्ण हो तो उस विसर्ग का 'र्' हो जाता है।

उदाहरण—

प्रातः + गच्छति	=	प्रातर्गच्छति
अहः + निशम्	=	अहर्निशम्
पुनः + आस्ते	=	पुनरास्ते
हरिः + अवदत्	=	हरिरवदत्

3. विसर्गस्य लोपः

विसर्ग का लोप निम्नलिखित नियम से होता है—

(क) सः और एषः के पश्चात् 'अ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर या व्यञ्जन हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे—सः एति = स एति। एषः + याति = एष याति।

(ख)विसर्ग के पहले 'अ' हो और उसके बाद 'अ' से भिन्न कोई अन्य स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे—रामः + आगच्छति = राम आगच्छति। अतः + एव = अतएव।

(ग) विसर्ग के पहले 'आ' हो और उसके बाद कोई भी स्वर हो या वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो या य्, र्, ल्, व्, ह्, में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है— जैसे—देवाः + इह = देवाइह। वाताः +वान्ति = वातावान्ति।

4. सत्व सन्धि

यदि विसर्ग के बाद च्, छ्, हो तो विसर्ग का 'श्', ट्, ठ् हो तो विसर्ग का 'ष्' तथा क्, त्, स्, थ् हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है। जैसे— कः + चित् = कश्चित्। रामः + टीकते = रामष्टीकते। नमः + कारः = नमस्कारः। भक्तः + सेवते = भक्तस्सेवते।

पाठ्यक्रम में निम्नलिखित सन्धियाँ हैं।

(i) **व्यञ्जन सन्धिः**—तुकागमः, मोऽनुस्वारः वर्गीयप्रथमक्षराणां तृतीय वर्णे परिवर्तनम्, प्रथमवर्णस्य पञ्चमवर्णे परिवर्तनम्।

(ii) **विसर्ग सन्धिः**—विसर्गस्य उत्वं, सत्वम्, विसर्गलोपः, विसर्गस्य स्थाने स्, श्, ष्।

❑❑

अध्याय - 2 समासः (वाक्येषु समस्तपदानां विग्रहः विग्रहपदानां च समासः)

स्मरणीय बिन्दु

(1) समास मुख्य रूप से दो पदों के मध्य होता है। इसमें दो ही पद होते हैं—पूर्वपद, उत्तरपद। पूर्वपद में विभक्ति लगाकर उत्तरपद लिखना विग्रह कहा जाता है।

(2) यह संज्ञा, सर्वनाम आदि पदों के मध्य होता है। अनेक शब्दों का समास अर्थानुसार किया जाता है।

समास शब्द की व्युत्पत्ति—'सम्' पूर्वक 'अस्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगने पर समास शब्द बना।

समास का अर्थ है—समसनं समासः अर्थात् 'संक्षेप' करना या 'घटाना'।

दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि दो या दो से अधिक पदों को एक पद बनाने की प्रक्रिया, नियम या विधि को (संक्षेप करने की विधि को) समास कहते हैं। समास को समस्त पद भी कहते हैं।

यथा—नृणाम् पतिः — नृपतिः

यहाँ 'नृपतिः' का भी वही अर्थ है जो 'नृणाम् पतिः' का है, परन्तु दोनों पदों को मिला देने से 'नृणाम्' के विभक्ति सूचक-प्रत्यय 'आणाम्' का लोप हो गया और 'नृपतिः' शब्द 'नृणाम् पतिः' से छोटा हो गया। अतः 'नृपतिः' समस्त पद है।

समस्त पद को तोड़कर विभक्ति के साथ अलग-अलग अर्थात् टुकड़े-टुकड़े करना विग्रह कहलाता है; जैसे—'नृणाम् पतिः'।

समास के भेद

समास के निम्नलिखित भेद होते हैं—

1. तत्पुरुष समास—(i) विभक्ति, (ii) उपपद, (iii) नञ्,
2. कर्मधारय समास,
3. द्विगु समास,
4. द्वन्द्व समास,
5. बहुव्रीहि समास,
6. अव्ययीभाव समास।

पाठ्यक्रमानुसार केवल तत्पुरुष—(i) विभक्तिः, (ii) नञ्, (iii) उप पद, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, बहुब्रीहि तथा समानाधिकरण, अव्ययीभाव समास का अध्ययन अपेक्षित है—

1. तत्पुरुष समास—(i) विभक्ति तत्पुरुष समास में विग्रह करते समय द्वितीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है, समस्त पद बनाते समय जिस विभक्ति का लोप होता है, यह समास उसी नाम से जाना जाता है।

(क) कर्म तत्पुरुष समास (द्वितीया तत्पुरुष समास)—इस समास में पूर्व पद में द्वितीया विभक्ति होती है तथा उत्तर पद में श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त, आपन्न, आदि शब्दों के योग में कर्म तत्पुरुष या द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण—

रामश्रितः	=	रामं श्रितः	अरण्यातीतः	=	अरण्यम् अतीतः।
शोकपतितः	=	शोकं पतितः	दुःखापन्नः	=	दुःखम् आपन्नः।
गृहगतः	=	गृहं गतः	मेघात्यस्तः	=	मेघान्अत्यस्त।
सुखप्राप्तः	=	सुखं प्राप्तः			

(ख) करण तत्पुरुष समास (तृतीया तत्पुरुष समास)—जब विग्रह में प्रथम पद तृतीया विभक्ति में हो तब वह तृतीया तत्पुरुष कहलाता है।

उदाहरण—

हरित्रातः	=	हरिणा त्रातः	सुखहीनः	=	सुखेन हीनः
खड्गहतः	=	खड्गेन हतः	नखभिन्नाः	=	नखैः भिन्नाः
बाणहतः	=	बाणेन हतः			

(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष समास (चतुर्थी तत्पुरुष समास)—जब विग्रह में पूर्व पद चतुर्थी विभक्ति में हो तब चतुर्थी तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण—

यूपदारु	=	यूपाय दारु
भूतबलिः	=	भूतेभ्यः बलिः
गोहितम्	=	गवे हितम्

(घ) अपादान तत्पुरुष समास (पञ्चमी तत्पुरुष समास)—जब समास का प्रथम शब्द पञ्चमी विभक्ति में हो, तब वह पञ्चमी तत्पुरुष समास कहलाता है।

उदाहरण—

चौरभयम्	=	चौरात् भयम्
सिंहभयम्	=	सिंहात् भयम्
व्याघ्रभीतिः	=	व्याघ्रात् भीतिः

(ङ) सम्बन्ध तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष)—षष्ठी तत्पुरुष समास में प्रथम शब्द षष्ठी विभक्ति में होता है।

उदाहरण—

1. राजसेवकः = राज्ञः सेवकः
2. ईश्वरभक्तः = ईश्वरस्य भक्तः
3. सुरेशः = सुराणाम् ईशः
4. नरपतिः = नराणाम् पतिः

(च) अधिकरण तत्पुरुष समास (सप्तमी तत्पुरुष समास)—जिसका प्रथम शब्द सप्तमी विभक्ति में होता है वह सप्तमी तत्पुरुष होता है।

उदाहरण—

अक्षशौण्डः = अक्षेषु शौण्डः
प्रेमधूर्तः = प्रेम्णि धूर्तः
मध्यान्तरः = मध्ये अन्तरः
नीतिनिपुणः = नीतौ निपुणः

(ii) नञ् तत्पुरुष समास—निषेध (Negative) अर्थ को बताने के लिए नञ् तत्पुरुष का प्रयोग होता है। यदि तत्पुरुष में प्रथम पद 'न' रहे और दूसरा पद संज्ञा या विशेषण हो तो वह नञ् तत्पुरुष समास कहलाता है। यह 'न' व्यञ्जन से पूर्व 'अ' में तथा स्वर के पूर्व 'अन्' में बदल जाता है—

उदाहरण—

अक्षत्रम् = न क्षत्रम्
अब्राह्मणः = न ब्राह्मणः
अन्यायः = न न्यायः

(iii) उपपद तत्पुरुष समास—यदि तत्पुरुष का पूर्व पद ऐसी संज्ञा या अव्यय हो जिसके अभाव में दूसरे पद (उत्तर पद) का वह रूप नहीं रह सकता जो उसका है तो वह उप पद तत्पुरुष समास कहलाता है। इसमें उत्तर पद में कोई क्रिया अवश्य होती है।

उदाहरण—

स्वर्णकारः = स्वर्णं करोति इति
मालाकारः = मालां करोति इति
चित्रकारः = चित्रं करोति इति

2. **कर्मधारय समास**—जहाँ दोनों पदों में विशेषण—विशेष्य या उपमेय—उपमान का संबंध होता है वहाँ कर्मधारय समास होता है। यह तत्पुरुष समास का ही एक भेद है।

(1) प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य—

यथा—नीलोत्पलम् = नीलम् च तद् उत्पलम्।

(2) प्रथम पद उपमान तथा दूसरा पद उपमेय—

यथा—घनश्यामः घनः इव श्यामः।

(3) प्रथम पद उपमेय तथा दूसरा पद उपमान—

मुखकमलम्—मुखं कमलमिव।

3. **द्विगु समास**—कर्मधारय समास में यदि प्रथम पद संख्यावाची हो और दूसरा पद संज्ञा हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं। अधिकतर यह समाहार अर्थ में होता है। द्विगु प्रायः नपुंसकलिंग होता है।

यथा—त्रिलोकम् = त्रयाणां लोकानां समाहारः।
त्रिभुवनम् = त्रयाणां भुवनानां समाहारः।

द्विगुः = द्वयोः गवोः समाहारः।

नवग्रहम् = नवानां ग्रहाणां समाहारः।

पञ्चवटी = पञ्चानां वटानां समाहारः।

4. **द्वन्द्व समास**—'चार्थे द्वन्द्वः' इस सूत्र से यह स्पष्ट होता है कि द्वन्द्व समास 'च' के अर्थ में होता है, जैसे—रामः च कृष्णः च।

जिस समास में सभी पद अर्थात् पूर्व पद और उत्तरपद प्रधान हों, वह द्वन्द्व समास होता है। द्वन्द्व समास साधारणतया तीन प्रकार का होता है— **(i)** इतरेतर द्वन्द्व **(ii)** समाहार द्वन्द्व **(iii)** एकशेष द्वन्द्व

(i) इतरेतर द्वन्द्व—इसमें दो या दो से अधिक पदों का प्रयोग होता है। पदों की संख्या के अनुसार द्विवचन या बहुवचन का प्रयोग अन्त में होता है। लिंग का प्रयोग अन्तिम शब्द के अनुसार होता है। जैसे—माता च पिता च = मातापितरौ। कन्दं च मूलं च फलानि च = कन्दमूल फलानि।

(ii) समाहार द्वन्द्व—शब्द समूहवाची हो (जाति वाचक) समास बनने पर शब्द के अन्त में नपुंसकलिंग, एकवचन होता है—जैसे—गोधूमचणकम् गोधूमाः च चणकाः च तेषां समाहारः।

(iii) एकशेष द्वन्द्व—इस समास में जोड़े का समास होता है और दोनों पदों के स्थान पर किसी एक पद को लेकर द्विवचन अथवा बहुवचन लिखा जाता है जैसे—माता च पिता च = पितरौ

5. **बहुव्रीहि समास**—'अनेकमन्यपदार्थे' इस सूत्र के अनुसार जिस समास में समस्त पदों से भिन्न कोई अन्य पदार्थ प्रधान हो उसे 'बहुव्रीहि' समास कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि जहाँ अर्थ करने पर जिसको, जिसने, जिसका, जिसमें, आदि अर्थ निकलें जैसे—चतुर्मुखः = चत्वारि मुखानि यस्य सः।

बहुव्रीहि समास को दो भागों मे विभाजित किया जाता है— **(i)** समानाधिकरण, **(ii)** व्यधिकरण।

समानाधिकरण बहुव्रीहि समास—इसमें पूर्व पद व उत्तर पद दोनों में समान विभक्ति होती है। जैसे—लम्बोदरः = लम्बम् उदरं यस्य सः।

6. **अव्ययीभावः समास**— 'पूर्व पद प्रधानोऽव्ययी भावः' इस सूत्र के अनुसार जिस समास में पहला पद प्रधान होता है तथा सम्पूर्ण पद अव्यय हो जाता है, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे—यथाशक्ति = शक्तिम् अनतिक्रम्य।

अन्य उदाहरण—

1. अनु (पश्चात् तथा योग्यम्)—अनुरथम् = रथानां पश्चात् इति। अनुरूपम् = रूपस्य योग्यम् इति।
2. उप (समीपम्)— उपगंगम् = गंगायाः समीपम् इति।
3. सह (सहितं)—सचित्रम् = चित्रेण सहितम्।
4. निर् (अभावः)—निर्जनम् = जनानाम् अभावः।
5. प्रति (वीप्सा)—प्रतिदिनम् = दिनम् दिनम् इति।
6. यथा (अनति क्रम्य)— यथाविधि = विधिम् अनतिक्रम्य।

पाठ्यक्रमान्तर्गत—'तत्पुरुष (विभक्ति), अव्ययी भाव, बहुव्रीहि, द्वन्द' समास ही लिए गए हैं।

❑❑

अध्याय - 3 प्रत्ययाः

स्मरणीय बिन्दु

(1) धातु अथवा शब्द के अन्त में प्रत्यय लगा देने से उनके अर्थ में परिवर्तन आ जाता है।

(2) प्रत्ययों का प्रयोग तीनों लिङ्गों (पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग) एवं तीनों कालों (भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्यकाल) में किया जाता है।

प्रत्यय—वे शब्द या शब्दांश, जिनका अपना कोई स्वतन्त्र अर्थ नहीं होता, परन्तु किसी शब्द या धातु के पीछे जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते है; जैसे—

कृ + क्त्वा = कृत्वा, कुमार + ङीप् = कुमारी।

कृदन्ताः—कृदन्ताः अर्थात् कृत् प्रत्यय धातुओं के साथ जुड़कर संज्ञा, विशेषण आदि शब्दों का निर्माण करते हैं; जैसे—

कृ + तव्यत् = कर्तव्य, भू + क्त्वा = भूत्वा।

विशेष—कृदन्ताः (कृत् प्रत्यय) मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं परन्तु प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम में केवल तव्यत् व अनीयर् प्रत्यय निर्धारित हैं।

तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय विधिलिङ्ग (चाहिए) अर्थ को प्रकट करते हैं। यह विधिलिङ् लकार 'चाहिए' अर्थ में प्रयुक्त होता है इसलिए ये (तव्यत् और अनीयर्) प्रत्यय भी इसी अर्थ में प्रयोग में लाए जाते हैं। विधिलिङ् लकार के अर्थ में विधि कृदन्त अर्थात् तव्यत् और अनीयर् आदि शब्दों का प्रयोग होता है। इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग कर्म वाच्य और भाव वाच्य वाक्यों में होता है। तव्यत् का 'तव्य' और अनीयर् का 'अनीय' शेष रहता है। इन प्रत्ययों के परे होने पर धातु के अन्तिम स्वर का गुण हो जाता है। अथार्त् इ, ई को 'ए', उ, ऊ को 'ओ' तथा ऋ का 'अर्' हो जाता है; जैसे—जि + तव्यत् = जेतव्य, जि + अनीयर् = जयनीय, इत्यादि।

(1) जब ये कर्मवाच्य में होंगे तो कर्म के अनुसार इनके लिंग वचन और कारक होंगे। कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे— त्वया पुस्तकानि पठितव्यानि / त्वया पुस्तकानि पठनीयानि । इन वाक्यों में कर्ता 'त्वम्' में तृतीया विभक्ति कर्म 'पुस्तक' को प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार नपुंसकलिंग बहुवचन में 'पठितव्यानि' तथा 'पठनीयानि' का प्रयोग होता है।

(2) जब तव्यत् और अनीयर् भाव वाच्य में होंगे तो कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा तव्यत् अनीयर् प्रत्ययों में नपुंसकलिंग एकवचन ही रहता है; जैसे—

(3) तेन हसितव्यम् / तेन हसनीयम्।

तव्यत्, अनीयर् प्रत्ययान्त पद विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं।

(क) तव्यत् प्रत्ययः

शब्द बनाने के नियम—

1. तव्यत् प्रत्यय का प्रयोग चाहिए अथवा योग्य के अर्थ में होता है— जैसे— जि + तव्यत्=जेतव्यः (जीतने योग्य), लिख् =लेखितव्यः (लिखने योग्य)।

तव्यत् प्रत्यत् के रूप तीनों लिङ्गों तथा सभी कारको में बनते है। जैसे—प्रथमा— पुल्लिग—जेतव्यः (रामवत्) स्त्रीलिंग— जेतव्या (लतावत्), नपुसकंलिङ्गम्—जेतव्यम्(फलवत्)।

2. धातु से तव्यत् प्रत्यय जुड़ने पर उसके प्रथम स्वर इ, उ, ऋ, लृ का गुण (क्रमशः ए, ओ, अर्, अल्) हो जाता है, जैसे— चि + तव्यत् = चेतव्यः, जि + तव्यत्=जेतव्यः, क्रुध्+ तव्यत्= क्रोधव्यः।

3. सेट्(इ से युक्त होने वाली) धातु+ तव्यत् प्रत्यय के मध्य इट् (इ) लग जाता है, जैसे—पठ्+तव्यत्= पठितव्यः,क्रीड्+तव्यत्= क्रीडितव्यः।

4. तव्यत् प्रत्यय के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे— मया रोटिका खादितव्या, मया फलं खादितव्यं, मया ग्रन्थः पठितव्यः।

5. अकर्मक धातु में तव्यत् युक्त क्रिया प्रथमान्त नपुंसकलिंग तथा एकवचन की होती है— सर्वैः किमर्थम् खदितव्यम्।

तव्यत् प्रत्ययान्त शब्दानां वाक्यप्रयोगाः

1. छात्रैः पुस्तकालये तूष्णीम् स्थातव्यम्।
2. जनैः समाचारपत्राणि पठितव्यानि।
3. बालैः गुरुः गन्तव्यः।
4. बालिकया गीतं गातव्यम्।
5. त्वया भोजनं खादितव्यम्।

(ख) अनीयर् प्रत्यय:

संस्कृत में अनीयर् प्रत्यय का प्रयोग तव्यत् प्रत्यय की भाँति चाहिए अथवा योग्य अर्थ में किया जाता है जैसे— कृ+ अनीयर्= करणीय:, पठ् + अनीयर् = पठनीय:, दा + अनीयर् =दानीय:। अनीयर् प्रत्यय कर्म वाच्य तथा भाव वाच्य में होता है। इसमें र् का लोप हो जाता है तथा अनीय शेष रहता है। अनीयर् युक्त वाक्य में कर्ता तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। धातु उपसर्ग में र्/ष्/ऋ के रहने पर णत्व का नियम भी लागू हो जाता है, जैसे—आप् +अनीयर् =आपनीयम्, प्र + अनीयर् = प्रापणीयम्

इसका प्रयोग कर्मवाच्य में होता है तथा कहीं विशेषणवत् भी होता है। जैसे—अस्माभि: लेख: लेखनीय:=हमारे द्वारा लेख लिखा जाना चाहिए। भाववाच्य में — सर्वै: हसनीयम् = सबको हँसना चाहिए।

अनीयर् प्रत्ययान्त शब्दानां वाक्यप्रयोगा:

1. पिता पुत्रा: पुत्र्या: च पाठनीया:।
2. पितर: सदैव वन्दनीया:।
3. पुस्तकेषु किमपि न लेखनीयम्।
4. अस्माभि: सेवका: पोषणीया:।
5. तेजना: वन्दनीया: भवन्ति।

(ग) शतृ प्रत्यय:

करता/ होता हुआ अर्थ प्रकट करने हेतु परस्मैपदी धातुओं में वर्तमान काल बोधक शतृ प्रत्यय लगता है। शतृ प्रत्यय में से श् तथा ऋ का लोप हो जाता है। मात्र अत् शेष रह जाता है। शतृ प्रत्ययान्त शब्द क्रिया विशषेण के रूप में प्रयुक्त होता है।

धातुओं के साथ गुणों के विकरण अ, य, अय आदि भी लगते हैं। भ्वादिगण एवं तुदादिगण का विकरण शप् तथा श) का अ पररूप होकर (दीर्घ सन्धि के बिना) शतृ के अ में मिल जाता है।

शत् प्रत्यय लगने पर परिवर्तनशील धातुओं में परिवर्तन भी कर दिया जाता है, जैसे — गम्+ अत्(गम् का गच्छ) गच्छ् + अत =गच्छत् =जाता हुआ, पठ् +अत् =पठत्, हस् + अत्=हसत्।

शतृ प्रत्ययान्त शब्दानां वाक्यप्रयोगा:

(i) पुष्पवाटिकां गच्छन्त्य: युवतय: हसन्ति।

(ii) जीवितं वाञ्छन् नर: कलहयुक्तं गृहं त्यजेत्।

(iii) तस्य मेषस्य क्षितौ प्र लुँठ् +शतृ वहिनज्वाला:।

(iv) ग्रामं गम् + शतृ मनुष्य: वृक्षच्छायाम् अधिशेते।

(v) गुरूणां मार्गम् अनु सृ + शतृ मनुष्य: शोभते।

(घ) शानच् प्रत्यय:

शानच् का प्रयोग शतृ के ही अर्थ में होता है। शतृ प्रत्यय परस्मैपदी और उभयपदी धातुओं के साथ होता है जबकि वर्तमान कालबोधक शानच् का प्रयोग उभयपदी और आत्मनेपदी धातुओं के साथ। शानच् प्रत्यय में से श् च् का लोप हो जाता है, श् के स्थान पर प्राय: म् लग जाता है। शानच् प्रत्ययान्त पदप्रयोग विशेषण रूप में अलग अलग वचनों में होता है। भ्वादिगणीय धातुओं के साथ विकरण अ भी लग जाता है। इस प्रत्यय से जुड़े शब्द रूप पुल्लिंग में रामवत्, स्त्रीलिङ्ग में रमावत् तथा नपुंसकलिङ्ग में फलवत् चलते हैं। शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के लिंग वचन तथा कारक विशेष्य के अनुसार रहते हैं। शानच् प्रत्यय के उदाहरण हैं—

शानच् प्रत्ययान्त शब्दानां वाक्यप्रयोगा:

(i) देशं सेव् + शानच् सैनिका: सर्वोच्चं बलिदानं कुर्वन्ति।

(ii) शिवं वन्द् + शानच् पार्वती कठोरतप: अकरोत्।

(iii) पुरस्कारं लभमान: बालक: प्रसन्नोऽस्ति।

(iv) धारां विभ्राण: शेषनाग: कष्टं नानुभवति।

तद्धिताः—तद्धित शब्द का अर्थ है—'तेभ्यः प्रयोगेभ्यः हिताः इति तद्धिताः' अर्थात् ऐसे प्रत्यय जो विभिन्न प्रयोगों के काम में आ सकें तथा जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषणादि के साथ जुड़कर उनके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे—वसुदेव + अण् = (वसुदेवस्य अपत्यः पुमान् इति) यहाँ पर वसुदेव से अण् प्रत्यय होने पर वासुदेव बना। तद्धित प्रत्यय अनेक हैं, परन्तु पाठ्यक्रम में मतुप्, इन्, ठक्, त्व तथा तल् प्रत्यय हैं।

मतुप् (मत्, वत्)

किसी संज्ञा शब्द से यह प्रत्यय जोड़ा जाता है। यह प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषणादि के साथ जोड़ा जाता है। यथा—गुण + मतुप् = गुणवान्। अर्थात् वह इसका है (तदस्यास्ति) अथवा वह इसमें है (तदस्मिन्नस्ति) इन अर्थों को प्रकट करता है।

'मतुप्' प्रत्यय से युक्त शब्द विशेषण होता है—यथा—शक्तिमान् जनः।

'मत्' के स्थान पर 'वत्' का प्रयोग—यदि शब्द के अन्त में 'स्' अथवा अ/आ/वर्गीय प्रथमः, द्वितीयः, तृतीयः चतुर्थः च वर्ग हो तो 'मत्' के स्थान पर 'वत्' होता है—यथा—

रूप + मतुप् = रूपवत्

यशस् + मतुप् = यशस्वत्

भास् + मतुप् = भास्वत्

उदाहरण—

(1)	**अकारान्त** शब्दों में मतुप्—	शील	+	मतुप्	=	शीलवत्
		भग	+	मतुप्	=	भगवत्
(2)	**आकारान्त** शब्दों में मतुप्—	आशा	+	मतुप्	=	आशावत्
		शोभा	+	मतुप्	=	शोभावत्
(3)	**इकारान्त** शब्दों में मतुप्—	शक्ति	+	मतुप्	=	शक्तिमत्
		भूमि	+	मतुप्	=	भूमिमत्
(4)	**उकारान्त** शब्दों में मतुप्—	भानु	+	मतुप्	=	भानुमत्
		अंशु	+	मतुप्	=	अंशुमत्
(5)	**ऊकारान्त** शब्दों में मतुप्—	वधू	+	मतुप्	=	वधूमत्
(6)	**ऋकारान्त** शब्दों में मतुप्—	पितृ	+	मतुप्	=	पितृमत्
		मातृ	+	मतुप्	=	मातृमत्
(7)	**ओकारान्त** शब्द में मतुप्—	गो	+	मतुप्	=	गोमत्
(8)	**हलन्त** शब्दों में मतुप्—	आयुष्	+	मतुप्	=	आयुष्मत्
		धनुष्	+	मतुप्	=	धनुष्मत्

इन् (णिनि) प्रत्ययाः

अकारान्त शब्दों से 'वाला' अर्थ में इन् प्रत्यय होता है;

जैसे—धन + इन् = धनिन्।

पुल्लिंग—धनी	धनिनौ	धनिनः	(शशिवत्)	
स्त्रीलिंग—	धनिनी	धनिन्यौ	धनिन्यः	(नदीवत्)
नपुंसकलिंग —	धनिन्	धनिनी	धनीनि	(वारिवत्)

उदाहरण—

रूप	+	इन्	=	रूपिन्
फल	+	इन्	=	फलिन्
हस्त	+	इन्	=	हस्तिन्
गृह	+	इन्	=	गृहिन्

ठक् (इक् प्रत्ययाः)

अकारान्त संज्ञा शब्दों से पृथक्-पृथक् अर्थों को प्रकट करने के लिए 'ठक्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। 'ठक्' प्रत्यय के स्थान पर 'इक' हो जाता है। ठक् प्रत्यय पर रहते शब्द के प्रथम स्वर की वृद्धि हो जाती है।

यथा—

धर्म	+	ठक्	=	धार्मिकः
इतिहास	+	ठक्	=	ऐतिहासिकः
समाज	+	ठक्	=	सामाजिकः
पक्षी	+	ठक्	=	पाक्षिकः
नास्ति	+	ठक्	=	नास्तिकः

त्व प्रत्ययः

तल् प्रत्ययः

भाववाचक संज्ञा बनाने हेतु 'त्व एवं तल्' प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। ' तल्' का प्रयोग विशेषण शब्दों के साथ भी होता है शब्द के साथ 'त्व' पूरा जुड़ता है तथा 'तल् ' के स्थान पर 'ता ' जुड़ता है। 'त्व' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग एक वचन के रूप में प्रयुक्त होता है तथा 'तल्' से जुड़ने पर शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होता है तथा उसके रूप लतावत् बनते हैं।

त्व तथा तल् (ता) प्रत्ययान्त शब्दों के उदाहरण—

शब्द	त्व-प्रत्यय	तल् (ता) प्रत्यय	शब्द	त्व-प्रत्यय	तल् (ता) प्रत्यय
क्रूर	क्रूरत्वम्	क्रूरता	सघन	सघनत्वम्	सघनता
महत्	महत्त्वम्	महत्ता	रमणीय	रमणीयत्वम्	रमणीयता
घन	घनत्वम्	घनता	उदार	—	उदारता
विद्वत्	विद्वत्त्वम्	विद्वता	दयालु	—	दयालुता
चपल	चपलत्वम्	चपलता	कृपण	कृपणत्वम्	कृपणता
मधुर	मधुरत्वम्	मधुरता	नृप	नृपत्वम्	नृपता
गहन	गहनत्वम्	गहनता	संक्षिप्त	—	संक्षिप्तता
पृथु	पृथुत्वम्	पृथुलता	देव	देवत्वम्	देवता
मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता	लघु	लघुत्वम्	लघुता
विशाल	विशालत्वम्	विशालता	दृढ़	दृढ़त्वम्	दृढ़ता
कवि	कवित्वम्	कविता	कृष्ण	कृष्णत्वम्	कृष्णता
दीन	दीनत्वम्	दीनता	दीर्घ	दीर्घत्वम्	दीर्घता
क्षत्रिय	क्षत्रियत्वम्	क्षत्रियता	पटु	पटुत्वम्	पटुता
वीर	वीरत्वम्	वीरता	हीन	हीनत्वम्	हीनता
शम	शमत्वम्	शमता	कृति	कृतित्वम्	—
सम	समत्वम्	समता	पूर्ण	पूर्णत्वम्	पूर्णता

स्त्री-प्रत्ययाः

स्त्रीप्रत्ययः— स्त्रीलिङ्ग बनाने के काम आने वाले प्रत्यय स्त्री प्रत्यय कहलाते हैं। ये अनके हैं, यहाँ केवल पाठ्यक्रमानुसार टाप् तथा ङीप् प्रत्यय ही दिए जा रहे हैं—

टाप् प्रत्ययः

सूत्र-'अजाद्यतष्टाप्'।4/1/4

(1) अजादि समूह में प्रयुक्त (अकारांत) पुल्लिंगों को स्त्रीलिङ्ग बनाने में टाप् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है टाप् प्रत्ययान्त शब्दों के 'ट्, प्' का लोप होकर 'आ'रूप ही शेष रहता है, जैसे—

अजादिगण शब्द—

शब्द	+	**टाप् प्रत्यय**	**निर्मितशब्दः**	**हिन्दी रूप**
अज	+	टाप् (आ)	अजा	बकरी
एडक	+	टाप् (आ)	एडका	भेड़
अश्व	+	टाप् (आ)	अश्वा	घोड़ी
चटक	+	टाप् (आ)	चटका	चिड़िया
मूषक	+	टाप् (आ)	मूषिका	चुहिया
बाल	+	टाप् (आ)	बाला	बालिका
वैश्य	+	टाप् (आ)	वैश्या	वैश्य जाति की स्त्री
वत्स	+	टाप् (आ)	वत्सा	बछिया
कोकिल	+	टाप् (आ)	कोकिला	मादा कोयल
क्षत्रिय	+	टाप् (आ)	क्षत्रिया	क्षत्रिय जाति की स्त्री

ङीप् (ई)

'ङीप्' स्त्रीप्रत्यय है। प्रयोगदशा में इसका 'ई' ही शेष रहता है। स्त्रीलिङ्ग शब्द निर्माण के लिए 'ङीप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—लौकिक + ङीप् = लौकिकी। 'ङीप्' प्रत्ययान्त शब्दों की रूप रचना 'नदी' शब्द के समान होती है।

ध्यातव्यम्—जब शतृप्रत्ययान्त शब्दों के द्वारा 'ङीप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है तब अन्तिम 'त्' वर्ण से पहले 'न्' इस वर्ण का आगम होता है। जैसे—गम् + शतृ = गच्छत् + 'ङीप्' = गच्छन्त् + ई = गच्छन्ती।

उदाहरणम्—

	शब्दाः	+	**प्रत्यय**		**निर्मित स्त्रीलिंङ्गशब्दाः**
यथा—	देव	+	ङीप्	=	देवी
(1)	तरुण	+	ङीप्	=	तरुणी
(2)	कुमार	+	ङीप्	=	कुमारी
(3)	त्रिलोक	+	ङीप्	=	त्रिलोकिनी
(4)	किशोर	+	ङीप्	=	किशोरी
(5)	कर्तृ	+	ङीप्	=	कर्त्री
(6)	जनयितृ	+	ङीप्	=	जनयित्री
(7)	मनोहारिन्	+	ङीप्	=	मनोहारिणी
(8)	मालिन्	+	ङीप्	=	मालिनी
(9)	तपस्विन्	+	ङीप्	=	तपस्विनी
(10)	भवत्	+	ङीप्	=	भवती
(11)	श्रीमत्	+	ङीप्	=	श्रीमती
(12)	गच्छत् (गम् + शत्)	+	ङीप्	=	गच्छन्ती
(13)	पचत् (पच् + शत्)	+	ङीप्	=	पचन्ती
(14)	नृत्यत् (नृत् + शत्)	+	ङीप्	=	नृत्यन्ती
(15)	पश्यत् (दृश् + शत्)	+	ङीप्	=	पश्यन्ती
(16)	वदत् (वद् + शत्)	+	ङीप्	=	वदन्ती
(17)	पृच्छत् (प्रच्छ + शत्)	+	ङीप्	=	पृच्छन्ती

पाठ्यक्रम में, तद्धिताः मतुप, त्व, तल्, ठक् एवं स्त्रीलिंग में ङीप्, टाप् प्रत्यय प्रयुक्त हैं।

❑❑

अध्याय - 4 वाच्य परिवर्तनम्

स्मरणीय बिन्दु

वाच्य परिवर्तन–

(1) कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के नियमों के अनुसार ही कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में, कर्मवाच्य को कर्तृवाच्य में एवं भाववाच्य में परिवर्तन करना चाहिए।

(2) पाठ्यक्रम में वाच्य परिवर्तन केवल लट् लकार में कर्तृ-कर्म-क्रिया पर आधारित है।

क्रिया द्वारा किसी भी बात को कहने की विधि वाच्य कहलाती है। संस्कृत भाषा में तीन वाच्य होते हैं–

(i) कर्तृवाच्य, (ii) कर्मवाच्य, (iii) भाववाच्य।

(i) कर्तृवाच्य–जिस वाक्य में कर्त्ता प्रधान हो अर्थात् क्रिया कर्ता के अनुसार हो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। अर्थात् कर्ता यदि प्रथम पुरुष का हो तो क्रिया भी प्रथम पुरुष की होती है। यदि कर्ता मध्यम पुरुष का हो तो क्रिया भी मध्यम पुरुष की होती है। यदि कर्ता उत्तम पुरुष का हो तो क्रिया भी उत्तम पुरुष की होती है। कर्ता जिस वचन में हो क्रिया भी उसी वचन में होगी। जैसे–रामः पाठं पठति, रमा ग्रामम् गच्छति।

(ii) कर्मवाच्य–जिस वाच्य में कर्म प्रधान हो अर्थात् कर्म के अनुसार क्रिया आए उसे कर्मवाच्य कहते हैं। कर्मवाच्य में कर्ता, तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के अनुसार होती है। कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय जो वचन कर्ता में प्रथमा विभक्ति में हो कर्मवाच्य में वही वचन प्रयोग होगा। इसी प्रकार कर्म (द्वितीया) जिस वचन में हो वह प्रथमा में उसी वचन का प्रयोग होगा; यथा–देवः विद्यालयं गच्छति-देवेन विद्यालयः गम्यते। त्वम् जलं पिबसि–त्वया जलं पीयते।

(iii) भाववाच्य–अकर्मक क्रियाओं वाले वाक्य में कर्ता की प्रधानता न होकर भाव (क्रिया) की प्रधानता रहती है। क्रिया अकर्मक होने पर कर्तृवाच्य से वाक्य भाववाच्य में परिवर्तित होता है। भाववाच्य में कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा क्रिया हमेशा प्रथम पुरुष एकवचन की होती है। यथा–

(i) कन्यया क्रीडयते।

(ii) रामेण स्मर्यते।

वाच्य तालिका

वाच्यम्	कर्ता	कर्म	क्रिया
कर्तृवाच्यम्	प्रथमा विभक्ति लिंग पुरुष, वचन कर्तानुसार	द्वितीया विभक्ति लिंग पुरुष, वचन कर्मानुसार	कर्ता के पुरुष व वचन के अनुसार क्रिया के पुरुष व वचन (परस्मैपद/आत्मनेपद)
सकर्मक	विपुलः आशुतोषः सर्वे कामिनी	विद्यालयं गीतां गृहं फलानि	गच्छति। पठति। गच्छन्ति। खादति।
अकर्मक	सा दीक्षा तौ शीतांशुः सः	– – – – –	पिबति। पठति। गच्छतः। धावति। पठति।

कर्मवाच्य	तृतीया विभक्ति लिंग, पुरुष, वचन कर्तानुसार	प्रथमा विभक्ति लिंग, पुरुष, वचन कर्मानुसार	कर्म के पुरुष तथा वचन के अनुसार क्रिया के पुरुष तथा वचन धातु के साथ 'य' तथा आत्मनेपद के प्रत्यय।
सकर्मक	विपुलेन	विद्यालयः	गम्यते।
	आशुतोषेण	गीता	पठ्यते।
	सर्वैः	गृहं	गम्यते।
	कामिन्या	फलानि	खाद्यन्ते।
	तया	जलम्	पीयते।
भाववाच्य	तृतीया विभक्ति लिंग, पुरुष व वचन कर्तानुसार	– – –	धातु के साथ 'य' तथा आत्मनेपद के प्रथम पुरुष एकवचन के प्रत्यय।
	दीक्षया	–	पठ्यते।
	ताभ्याम्	–	गम्यते।
	शीतांशुना	–	धाव्यते।
	तेन	–	पठ्यते।

कर्तृवाच्यात्-कर्मवाच्ये परिवर्तनं (लट्लकार प्रयोगः)

कर्तृवाच्य वाक्य के कर्ता की प्रथमा विभक्ति की कर्मवाच्य वाक्य में तृतीया विभक्ति होती है। कर्तृवाच्य वाक्य के कर्म (द्वितीया विभक्ति) की कर्मवाच्य में प्रथमा विभक्ति होती है। कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के अनुसार तथा कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है तथा आत्मनेपद में होती है।

कर्तृवाच्यम्	**कर्मवाच्यम्**
1. रामः पुस्तकं पठति।	रामेण पुस्तकं पठ्यते।
2. त्वम् जलं पिबसि।	त्वया जलं पीयते।
3. युवां पत्रं लिखथः।	युवाभ्यां पत्रं लिख्यते।
4. पत्रवाहकः पत्रम् आनयति।	पत्रवाहकेन पत्रम् आनीयते।
5. सः बालकः पाठं पठति।	तेन बालकेन पाठः पठ्यते।

कर्मवाच्यात्-कर्तृवाच्ये परिवर्तनम्

कर्मवाच्य वाक्य के कर्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य में प्रथमा विभक्ति हो जाती है। कर्म की द्वितीया विभक्ति होती है। क्रिया के पुरुष, वचन कर्ता के अनुसार होते हैं तथा क्रिया परस्मैपद में होती है।

कर्मवाच्यात्	**कर्तृवाच्ये परिवर्तनम्**
1. बालेन विद्यालयः गम्यते।	बालः विद्यालयं गच्छति।
2. बालकेन गृहं गम्यते।	बालकः गृहम् गच्छति।
3. बालाभ्यां फलानि खाद्यन्ते।	बालौ फलानि खादतः।
4. बालैः जलं पीयते।	बालाः जलम् पिबन्ति।
5. बालिकया दुग्धं पीयते।	बालिका दुग्धं पिबति।

पाठ्यक्रम में केवल लट्लकारे (कर्तृ-कर्म क्रिया) प्रयुक्त हैं।

❑❑

अध्याय - 5 अङ्कानां स्थाने शब्देषु समयलेखनम्

स्मरणीय बिन्दु

समय लेखनम्—

संस्कृत में घड़ी का समय बताने हेतु बजे के लिए 'वादन' शब्द का, सवा के लिए 'सपाद' (स + पाद) का, आधे के लिए 'सार्द्ध (स + अर्द्ध) तथा पौने के लिए 'पादोन' (पाद + ऊन) शब्द का प्रयोग होता है।

पाद (Quarter) = 15 मिनट

अर्ध (Half) = आधा घण्टा (30 मिनट)

सपाद (Quarter Past) = सवा

सार्द्ध (Half Past) = साढ़े

पादोन (Quarter to) = पौने

वादन को चित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा रहा है—

I.

एकवादनम्
1.00 बजे

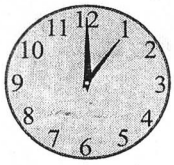

द्विवादनम्
2.00 बजे

त्रिवादनम्
3.00 बजे

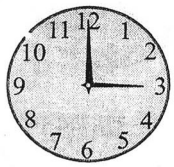

चतुर्वादनम्
4.00 बजे

पंचवादनम्
5.00 बजे

षड्वादनम्
6.00 बजे

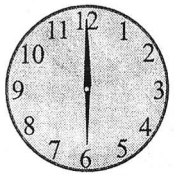

सप्तवादनम्
7.00 बजे

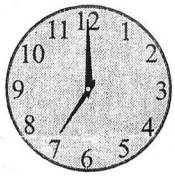

अष्टवादनम्
8.00 बजे

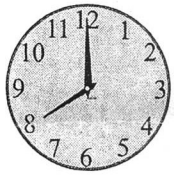

नववादनम्
9.00 बजे

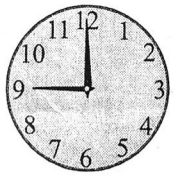

दशवादनम्
10.00 बजे

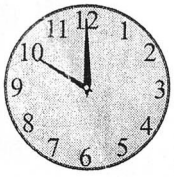

एकादशवादनम्
11.00 बजे

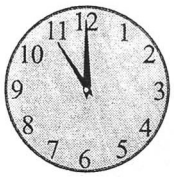

द्वादशवादनम्
12.00 बजे

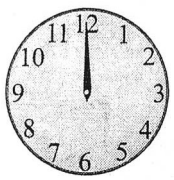

II. सपाद (सवा) [पाद/चतुर्थांश सहित]

सपाद-चतुर्वादनम्
4.15 बजे

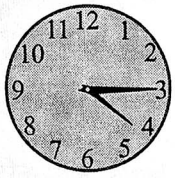

सपाद-पञ्चवादनम्
5.15 बजे

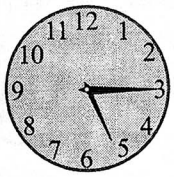

सपाद-षड्वादनम्
6.15 बजे

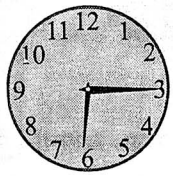

सपाद-सप्तवादनम्
7.15 बजे

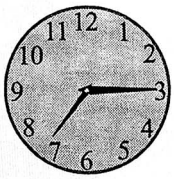

सपाद-अष्टवादनम्
8.15 बजे

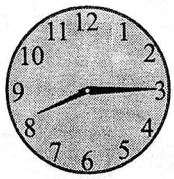

सपाद-नववादनम्
9.15 बजे

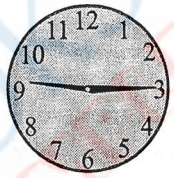

सपाद-दशवादनम्
10.15 बजे

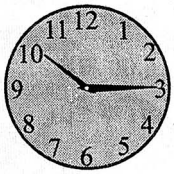

सपाद-एकादशवादनम् (सपादैकाशवादनम्)
11.15 बजे

III. सार्ध (साढ़े) [आधे सहित]

सार्ध-द्वादशवादनम्
12.30 बजे

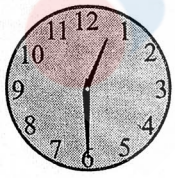

सार्ध-एकवादनम् (सार्धैकवादनम्)
1.30 बजे

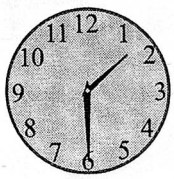

सार्ध-द्विवादनम्
2.30 बजे

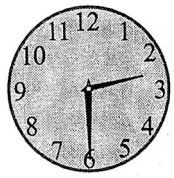

सार्ध-त्रिवादनम्
3.30 बजे

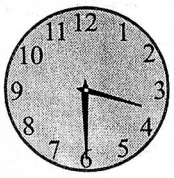

सार्धचतुवादनम् (सार्धैकवादनम्)
4.30 बजे

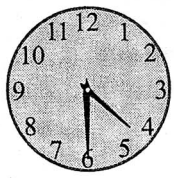

सार्ध-पञ्वादनम्
5.30 बजे

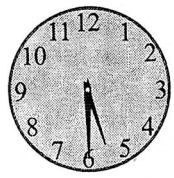

सार्ध-षड्वादनम्
6.30 बजे

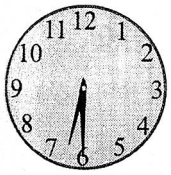

सार्ध-सप्तवादनम्
7.30 बजे

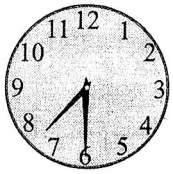

सार्ध-अष्टवादनम् (सार्धाष्टवादनम्)
8.30 बजे

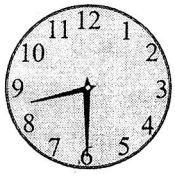

पादोन—एक चौथाई भाग कम होने पर पादोन प्रयुक्त किया जाता है। हिन्दी में इसे पौने कहते हैं जैसे-पौने चार, पौने पाँच, पौने छः, पौने सात आदि। पाद = चौथाई, ऊन = कम, एक चौथाई कम पादोन होता है।

पादोन-चतुर्वादनम्
3.45 बजे

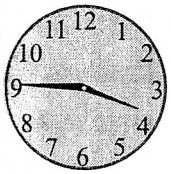

पादोन-पञ्चवादनम्
4.45 बजे

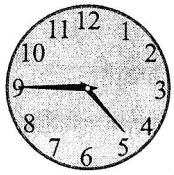

पादोन-षड्वादनम्
5.45 बजे

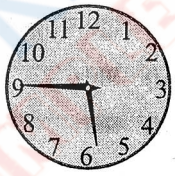

पादोन-सप्तवादनम्
6.45 बजे

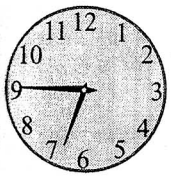

पादोन-अष्टवादनम् (पादोनाष्टवादनम्)
7.45 बजे

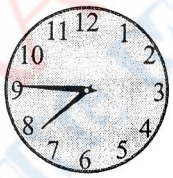

पादोन-नववादनम्
8.45 बजे

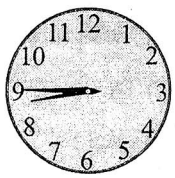

पादोन-दशवादनम्
9.45 बजे

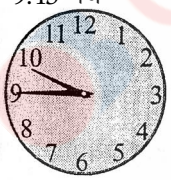

पादोन-द्वादशवादनम्
11.45 बजे

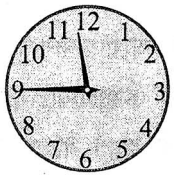

❑❑

अध्याय - 6 अव्ययपदानि

स्मरणीय बिन्दु

अव्यय—

(1) अव्यय हमेशा विकार रहित होता है, इसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं होता है।

(2) यह तीनों लिङ्गों में, सभी विभक्ति में और तीनों वचनों में एकसमान ही होता है।

अव्यय (अविकारी) वे शब्द हैं जो तीनों लिङ्गों में, तीनों वचनों में सभी विभक्तियों में एक जैसे रहते हैं। 'न व्ययेति' इति अव्ययम् अर्थात् जो खर्च नहीं होते वे ही अविकारी या अव्यय शब्द कहलाते हैं।

'सदृशं त्रिषु लिंगेषु, सर्वासु च विभक्तिसु।
सर्वेषु च वचनेषु, यन्न व्ययेति तदव्ययम्।।

ये अव्यय कई प्रकार के होते हैं। यथा—क्रियाविशेषण, उपसर्ग, निपात, संयोजक, विस्मयसूचक।

1. **क्रिया-विशेषण**—कुछ संज्ञा शब्दों के नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा एकवचन तथा अन्य विभक्तियों के रूप क्रिया-विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं।

   यथा–चिरं, चिरेण, दूरं, दूरेण, नानाविधम्, अत्र, तत्र, परितः।

2. **उपसर्ग**—उपसर्ग 22 होते हैं यथा—प्र, परा, अप, सम्, ... आदि।

3. **निपात**—ये अर्थ पर बल देने वाले होते हैं–

   यथा—खलु, नु, तु, किल।

4. **संयोजक**—कुछ अव्यय जोड़ने का काम करते हैं; यथा—च, वा, अथ, किन्तु, आदि।

5. **विस्मय सूचक**—कुछ विस्मय सूचक अव्यय होते हैं; यथा—हन्त, हा, धिक्, कष्टं, भो, हे, अहो आदि।

6. **प्रकीर्ण**—इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे अव्यय होते हैं जो गति, काल, स्थान, क्रम, समय, अवस्था, दिशा, प्रक्रिया आदि का संकेत देते हैं; यथा—पुनः, यथा, उच्चैः, नीचैः।

वर्गीकरण

समय बोधकानि	**स्थान बोधकानि**	**प्रश्न बोधकानि**	**प्रकीर्णानि**	**कालबोधकानि**
यदा-तदा, अधुना, ह्यः श्वः, पुरा	अत्र, यत्र-तत्र	कदा, कुतः, किमर्थम् कुत्र	इति, इव चित् /चन /मा, / यत्-यावतः, तावत्, कदापि, वृथा आदि।	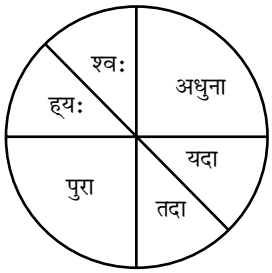

यद्यपि अव्यय अनेक हैं, लेकिन पाठ्यक्रम में निम्नलिखित अव्यय हैं–

(1) अपि—(भी)—अहम् **अपि** गृहं गमिष्यामि।

(2) इव—(की तरह / जैसा / समान)—अभिमन्युः अपि अर्जुनः **इव** वीरः आसीत्।

(3) उच्चैः—(ऊँचे)—कपोतः **उच्चैः** न गच्छति।

(4) एव—(ही)—रामः **एव** गच्छति।

(5) नूनम्—(निश्चय ही)—अद्य **नूनमेव** वृष्टिर्भविष्यति।

(6) पुरा—(पहले / प्राचीन काल में)—**पुरा** एकः सत्यवादी नृपः आसीत्।

(7) इतस्ततः—(इधर-उधर)—सः **इतस्ततः** क्रीडति।

(8) अत्र-तत्र—(यहाँ-वहाँ)—**अत्र** शुकाः वदन्ति। **तत्र** पठनाय गच्छ।

(9) इदानीम्—(अभी)—**इदानीम्** वृष्टिः भवति।

(10) यथा—तथा—(जैसे-वैसे)—**यथा** राजा **तथा** प्रजा।

(11) विना—(बगैर / के बिना)—सीता रामं **विना** वनं न गच्छति।

(12) सहसा—(अचानक)—**सहसा** मृगम् अपश्यम्।

(13) अधुना—(अब)—**अधुना** त्वं पठ।

(14) वृथा—(बेकार)—**वृथा** मा वद।

(15) शनैः—(धीरे)—वृद्धः **शनैः** चलति।

(16) इति—किसी के द्वारा बोले गए शब्दों को उसी प्रकार प्रयुक्त करने के लिए, उपसंहार द्योतकः जैसे—पयः ददाति **इति** पयोदः।

(17) कदा—कब। जैसे—रामः **कदा** गमिष्यति?

(18) कुतः—कहीं से, किधर से। जैसे—भवान् **कुतः** गमिष्यति।

(19) मा—मत, प्रायः लोट् लकार के साथ। जैसे—त्वम् **मा** वद।

(20) यत्—कि, चूँकि, क्योंकि,। जैसे—राम अवदत् **यत्** अहं विद्यालयं गमिष्यामि।

(21) यत्र-तत्र—जहाँ-वहाँ। जैसे—**यत्र** कृष्णः **तत्र** विजयः।

(22) सम्प्रति—अब। जैसे—सम्प्रति किम् भविष्यति।

(23) यदा-कदा—जब-कब। जैसे—अहम् **यदा-कदा** एव दिल्लीनगरम् गच्छामि।

(24) श्वः—आने वाला कल। जैसे—अहम् **श्वः** विद्यालयम् न आगमिष्यामि।

(25) ह्यः—बीता हुआ कल। जैसे—ह्यः त्वम् कुत्र आसीः?

(26) बहिः—बाहर (अपादान के साथ भी) जैसे—ग्रामाद् **बहिः** देवालयः अस्ति।

(27) कदापि—कभी, किसी समय। जैसे—अहम् **कदापि** असत्यं न वदिष्यामि।

(28) किमर्थम्—किसलिए। जैसे—त्वम् **किमर्थम्** हससि?

(29) यावत्—जब तक। जैसे—**यावत्** अहम् पठामि तावद् त्वम् लिख।

(30) कुत्र—कहाँ। जैसे—त्वं **कुत्र** गच्छसि।

- **पाठ्यक्रमान्तर्गत निम्नलिखित अव्यय—**

उच्चैः, च, श्वः, ह्यः, अद्य, अत्र-तत्र, यत्र-कुत्र, इदानीम्, अधुना, सम्प्रति, साम्प्रतम्, यदा, तदा, कदा, सहसा, वृथा, शनैः अपि कुतः, इतस्ततः, यदि-तर्हि।

❑❑

अध्याय - 7 अशुद्धि संशोधनम्

वचन-लिङ्-पुरुष-लकार- विभक्ति दृष्ट्या संशोधनम्—

(क) अधोलिखित वाक्यानि शुद्धं कुर्वन्तु—

1. कर्ता क्रिया-सम्बन्धः अशुद्धयः

1. सः गृहं गच्छसि।
2. त्वं मोहनस्य शत्रुः अस्ति।
3. तौ पाठं पठति।
4. यूयम् संस्कृतं पठथः।

2. विशेषण सम्बन्धः अशुद्धयः

1. मनोहरं बालः गच्छति।
2. तत् धेनुः कस्य अस्ति।
3. गंगायाः जलं पवित्रः अस्ति।
4. योग्यः मित्रं पठति।

3. वाच्य सम्बन्धः अशुद्धयः

1. सः ग्रामः गम्यते।
2. अहम् चिन्तितम्।
3. सः चित्रं दृष्टम्।
4. त्वया पुस्तकं पठसि।

4. विभक्ति सम्बन्धः अशुद्धयः

1. मार्गस्य उभयतः वृक्षाः सन्ति।
2. सर्वेषां स्वस्ति।
3. सः सिंहेन विभेति।
4. त्वं मां सह कुत्र गन्तुम् इच्छसि?

❑❑

खण्ड-'घ' पठित अवबोधनम्

अध्याय - 1 गद्यांश

द्वितीयः पाठः—बुद्धिर्बलवती सदा

स्मरणीय बिन्दु

प्रस्तुतः पाठः शुकसप्ततिः नामक प्रसिद्धा कथाग्रन्थात् संग्रहीतः अस्ति। अस्मिन् पाठे स्वः पुत्रद्वयेन सहिता वनस्य मार्गात् पितुः गृहं गच्छन्ती बुद्धिमती नामक नार्याः बुद्धिकौशलं दर्शितकम्। या समक्ष आगतः सिंह भयभीतं कृत्वा पालायित्व अस्मिन् कथाग्रन्थे नीति निपुणः शुकः सारिकायाः च कथाभिः अप्रत्यक्षरुपेण सद्वृत्तेः विकासं अकारयत् बुद्धिमती पुत्रद्वयेन उपेता पितुर्ग्रहं प्रतिचलिता। मार्गे एवं व्याघ्रं दृष्ट्वा सा पुत्रौ तर्जनं कुर्वाणा उवाच- अधुना एकमेव व्याघ्रं विभज्य भुज्यताम्। इदं श्रुत्वा व्याघ्रः इयम् व्याघ्रं मारमति इति मत्वा पलायितः। श्रृगालस्य उत्साहं ज्ञात्वा व्याघ्रः पुनः वनम् आगच्छत्। प्रत्युत्पन्नमतिः सा श्रृगालं आक्षेपं कुर्वाणा उवाच यत् 'त्वया मध्यम् त्रयव्याघ्रं आयेतुं प्रतिज्ञां, अकरोत् किन्तु त्वया अधुना एकमेव आनीतवान् इदानीम् वद। इति उक्त्वा भयङ्करा व्याघ्रमारी शीघ्रम् धाविता। गलबद्ध श्रृगालः व्याघ्रः अपि सहसा नष्टः अभवत्। एवं प्रकारेण बुद्धिमती व्याघ्रजात् भयात् पुनरपि मुक्ता अभवत्। सत्यं एव उच्यते। सर्वदा सर्वकार्येषु बुद्धिः बलवती भवति।

❑❑

पंचमः पाठः—जननी तुल्यवत्सला

स्मरणीय बिन्दु

प्रस्तुतः पाठ्यांशः महाभारतस्य वनपर्वत् उद्धृतः अस्ति। यस्याम् मुख्य रूपेण व्यासेन धृतरांष्ट्र एकस्याः कथ्नायाः माध्यमेन अयं सन्देशं प्रदातुं अकरोत् यत् त्वम् पिता भव। पिता भवितुम् स्वपुत्राभ्याम् सह स्व भातृणाम् हिंत करणं अपि उचितं अस्ति। अस्मिन् प्रसंगे धेनोः मातृत्वं चर्चां कुर्वत् गोमाता सुरभिः इन्द्रस्य च संवादयोः माध्यमेन इदम् अकथत् यत् मात्रे सर्वाणि अपत्यानि तुल्यं भवति। तासाम् हृदय सर्वेभ्यः समं स्नेहं भवति।

देवराजस्य इन्द्रस्य हृदयं अत्यधिकं अद्रवत्। सः च तामेवम् आसान्त्वयत् अकथत् "गच्छ वत्से सर्वे कल्याणे जायते्। पाठस्य कथा न केवलं मानवाः अपितु सर्वेषां जीवजन्तुनाम् प्रति समदृष्टयाम् बलं ददाति। समाजे दुर्बल जन्यः जीवनाम् प्रत्यापि मातुः वात्सल्यं प्रगाढ़ं भवति। अत्रैव अस्य पाठस्य अभिप्रेतं अस्ति।

पाठे कश्चिद् कृषकः वृषभाभ्याम् क्षेत्रस्य कर्षणम् कुर्वन्नासीत्। तयोः वृषभाभ्याम् एकः शरीरेण दुर्बलः तीव्रगगत्या गन्तुम् असमर्थः च आसीत्। कृषकः तं दुर्बलं वृषभं कष्टप्रदानेन बलने नीयमानः अवर्तत। सः वृषभः हलम् आदाय भूमौ अपतत्। क्रुद्धः कृषकः तं उत्थापयितुम् वहुवारं यत्नमकरोत्। तथापि वृषभः नोत्थितः। भूमौ पतिते स्वपुत्रं दृष्ट्वा मातुः सुरभेः नेत्राभ्याम् आश्रूणि आगवाः। अस्मिन् सन्दर्भे इन्द्रः सुरभिं अपृच्छत्- "अयिशुभे! त्वं किम् रोदिषि? सुरभिः अवदत् भोइन्द्रा पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहं रोदिमि सः दीनः इति जानम् अपि कृषकः तं पीडयति। सुरभि वचनं श्रुत्वाः विस्मितः।।

प्रस्तुते पाठे मानवीयानां मूल्यानां पराकाष्ठा प्रादर्शयत्। यद्यपि मातुः हृदये स्व सर्वेषाम् अपत्यानाम् प्रतिं समं प्रीतिं भवति। परन्तुं यः दुर्बलः सन्ततिः भवति तस्य प्रतिं मातुं मनसि यतिशयं प्रेमः भवति।

सप्तमः पाठः—सौहार्दं प्रकृतेः शोभा

स्मरणीय बिन्दु

अद्यतन समाजे सर्वे वन्य जीविनः अन्योन्याश्रिताः। सर्वे प्राणिनः स्व-स्व स्थार्थसाधनेषु अविरताः सन्ति। समाजे परस्परं प्रीतिं वर्धयितुं

अस्मिन् पाठे पशुपक्षिनाम् माध्यमेन समाजे निजं अन्यात् श्रेष्ठं प्रादर्शयत्। प्रकृतेः मातुः माध्यमेन अन्ते इदम् प्रादर्शयत् यत् सर्वेषाम् प्रकृते कृते यथासमयं स्व-स्व महत्वं अस्ति। किञ्चिद् अपि निरर्थकं नस्ति। यथा-गज वन्यपशून् तुदन्तं शुण्डेन पोथयित्वा मारयति। वानरः आत्मानं वनराजपदाय योग्यं: मन्यते। मयूरस्य नृत्यं प्रकृतेः आराधन। मयूरः बकस्य कारणात् पक्षिकुलम् अपमानितं मन्यते अन्योन्यसहयोगेन प्राणिनाम् लाभः जायते । काकचेष्टः विद्यार्थी आदर्शः छात्रः मन्यते। सत्यं कथ्यते।

दादत्रि प्रतिग्रहणति, गुह्मारव्याति पृच्छति।
भुङक्ते योजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्।।

अतः प्रकृतिमाता एव सर्वेषाम् जननी अस्ति। प्रकृते सर्वे प्रियाः सन्ति। सर्वे कलहेन समयं वृथा न यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च रसमयं कुरूध्वम् तद्यथा कथितम्

अगाधजलसञ्चारी न गर्व याति रोहितः।
अङगुष्ठोदकमात्रेण शफरी फुर्फुरायते।।

सर्वेऽपि शफरीवत् एकैकस्य गुणस्य चर्चा विहाय मिलित्वा प्रकृतिसौन्दर्याय वनरक्षायै च प्रयन्तं किं कुर्यार्त । तदैव अस्माकं एताः कामनाः अपि सार्थकं। सर्वे प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति मिलित्वा दृढ़संकल्पपूर्वकं च गायन्ति।

प्राणिनां जायते हानिः परस्पर विवादत्ः।
अन्योन्यसहयोगेन लाभस्तेषां प्रजायते।
सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवते्।।

❑❑

अष्टमः पाठः—विचित्रः साक्षी

स्मरणीय बिन्दु

प्रस्तुतः पाठः श्री ओमप्रकाश ठाकुरेन रचितं कथायाः सम्पादितं अंश अस्ति। इयम् कथा बंगलायाः प्रसिद्धः सहित्यकार बंकिम चन्द्र महोदयेन न्यायाधीश रूपे ददत् निर्षये आधरितं अस्ति। उचितमनुचितस्य निर्णयार्थम् न्यायाधीशः कदाचित् एतादृशीम् युक्तिनाम् प्रयोगं कुर्वन्ति, येन साक्ष्यस्य अभावे अपि न्यायं भवेत्। अस्याम् कथायाम् अपि विद्वानं न्यायाधीशः एतादृशीं युक्तिं प्रयोगित्वा न्यायं कर्तुम् सफलतां प्राप्नोत्।

न्यायो भवति प्रमाणा धीनः। प्रमाणं विना न्यायं कर्तुम् न कोऽपि क्षमः सर्वत्र। न्यायालयेऽपि न्यायाधीशः यस्मिन् अपि विषये प्रमाणाभावे न समर्थाः भवति। अतएव अस्मिन् पाठे चौर्याभियोगे न्यायाधीशः प्रथमतः साक्ष्यं (प्रमाणं) बिना निर्णेतुं नाशक्नोत्। अपरेधुः यदा सः शव न्यायाधीशं सर्वं निवेदितवान् सप्रमाणं तदा सः आरक्षिणे कारदण्डमादिश्यतं जनं ससम्मानं मुक्तवान्। अस्य पाठस्य अयम् सन्देशः।

सत्यं उच्चयते-ये विद्वासंः बुद्धिस्वरूपविभवयुक्तः ते मति वैभव शलिनः भवन्ति। ते एव बुद्धिचातुर्य बलेन असम्भवकार्याणि अपि सरलतया कुर्वन्ति। न्यायाधीशः बंकिमचन्द्रमहोदयैः अत्र प्रमाणस्य अभावे किमपिप्रच्छन्नः जनः साक्ष्यं प्राप्तुं नियुक्तः जातः। यद् घटितमासीत् सः सत्यं ज्ञात्वां साक्ष्यं प्रस्तुतवान पाठेऽस्मिन् शवः एव 'विचित्रः साक्षी' स्यात्।

❑❑

दशमः पाठः—भूकम्पविभीषिका (केवलं पठनार्थं वर्तते)

स्मरणीय बिन्दु

भूमेः कम्पनं भूकम्पः कथ्यते। तत् बिन्दु भूकम्पस्य उद्गमं केन्द्रं कथयते यत् विन्दते कम्पनस्य उत्पत्तिं भवति। कम्पन तरङ्गस्यरूपे अनेकासु दिशासु अग्रे चलति। भूकम्पविशेषताः कथयन्ति यत् ज्वालामुखपर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते। एकोत्तर द्विसहस्त्रव्रीष्टाब्दे (2001 ईस्वीयेवर्षे गणतन्त्र दिवस पर्वणि भूकम्पस्य दारूण- विभीषिकाः समस्तमपि गुर्जक्षेत्रं विशेषेण च कच्छजनपंद ध्वासावंशेषु परिवर्तितवती। इत्थम् महाप्लावन दृश्यं उपस्थितिम्। सहसत्रमिताः प्राणिनस्तु क्षणेनैव मृतः। ध्वस्त भवनेषु सम्पीडिता सहस्त्रशोडन्सये सहायतार्थं करुणकरणं वुन्दन्ति स्म। क्षुत्क्षामकण्ठाः मृतप्रायाः केचन शिशवस्तु ईश्वर कृपया एव द्वित्राणि दिन्यनि जीवनं धारितवन्तः।

यद्यपि दैवः प्रकोपो भूकम्पो नाम तस्योप शामनस्य न कोऽपि स्थिरोपायो दृश्यते। तथापि भूकम्प रहस्य ज्ञातारः कथियन्ति यत् बहुभूमिकभवन निमार्णं न करणीयम्। तटबन्धं निमतार्य बृहन्मात्रं नदीजलमपि नैकस्मिन् स्थले पुञ्जीकरणीयम् अन्यथा असन्तुलन वशाद् सम्भवति। वस्तुतः शान्तानि एव पञ्चतत्वानि क्षितिजलं पावनं समीर गगननि भूततस्य योगक्षेत्राभ्यां कल्पन्ते। अशान्तानि खलुः तान्येव महाविनाशं उपस्थापयन्ति।

प्रस्तुते पाठे इदम् अकथयत् यत् कस्याम् आपदायाम् विन्य घवराहटने हिम्मतेन सह केम प्रकरेण वयम् स्वसुरक्षा स्वयं कुर्वन्ति। यस्मानं वातावरणे भौतिक सुख साधनौः सह अनेकाः आपदाः इपि आयन्ति। प्राकृतिक आपदाः जीवनं अस्त व्यस्तं कुर्वन्ति। प्राचीनैः ऋषिभिः अपि स्वस्पवग्रन्थेषुः कृतः येन स्पष्टं भवति यत् भूकम्पः प्राचीनकालेऽपि आयान्ति स्म।

❑❑

अध्याय - 2 पद्यांशः

प्रथमः पाठः—शुचिपर्यावरणम्

स्मरणीय बिन्दु

प्रस्तुतः पाठः अद्यतन संस्कृत कविः हरिदत्त शर्मायाः रचना संग्रह 'लसल्लसिकायाः' संकलितं अस्ति। अस्मिन् पाठे कविः महानगराणां यांत्रिक बहुलतायाः बर्धयतः प्रदूषणें दुखम् व्यक्तयत् अकथयत् यत् अयम् लोकचक्रः तन-मनसः शोषकः अस्ति, येन वायुमंण्डलं भूमण्डलं च उभौ मालिन्यं भवन्ति। कविः महानगरात् जीवनात् दूरं नदी निर्झरः वृक्षाणं समूहंः लताकुञ्जं च पक्षिभ्यः गुञ्जितं वनप्रदेशानम् चलितुं इच्छां व्यक्तं करोति।

अत्र कविः प्रकृते शरणं गन्तुम् इच्छति यतोहि महानगरेषु शकटीयानानां शतम् धु अग्निवाहः त्यजति एतादृश्याम् स्थित्याम् असंख्याः यानानां पङक्तयोः सञ्चलनम् कठिनं वर्तते। इदानीं वायुमण्ड़लं अत्र प्रदूषितमस्ति। प्राकृतिक वातावरणेः क्षणं सञ्चj.kम् अपि लभदायकं भवति। प्रकृत्याः सान्निध्ये एव वास्तविकं सुखं विद्यते। परिष्कृतं प्रदूषण रहितं च पर्यावरणमस्मभ्यं सर्वविध जीवनसुखं ददाति। अस्माभिः सदैव तथा प्रभतितव्यं यथा जलं स्थलं गगनञ्च निर्मलं स्यात्। कवेः दृष्ट्याम् उद्याने पक्षिणां कलjवं चेतः प्रसादयति। अत्रैव जनेभ्यः सुखसन्देशं ददाति। कृत्रिé प्रभावपूर्ण जगति स्वजीवनरसस्य हरणं न कुर्यात्। प्रकृत्याम् यत्र हरितिगा तत्र शुचि पर्यावरणम् भवति। अतः कविः प्रस्तुते पाठे मानवाय जीवनं कामनां करोति।

❑❑

तृतीयः पाठः—व्यायामः सर्वदा पथ्यः

स्मरणीय बिन्दु

प्रस्तुतः पाठः आयुर्वेदस्य प्रसिद्धः ग्रन्थः 'सुश्रुत संहिताया:' चिकित्सायाम् स्थाने वर्णित चतुविशतिः अध्यायात् संकलितः अस्ति। अस्मिन् पाठे आचरार्य सुश्रुतः व्यायामस्य विषये स्वास्थ्यस्य लाभस्य चर्चां अकरोत्। यथ्ना शरीरे सुगठनें कान्तिः स्फूर्तिः, सहिष्णुता निगरोगताश्च इत्सयादयः व्यायामस्य प्रमुखाः लाभाः सन्ति।

वि+आ+ यम्+ धातोः घञ् प्रत्यायात् निष्पन्नः व्यायाम शब्दः विस्तारस्य विकासस्य च वाचकः। यतोहि शरीरमांध रपलु धर्मसाधनम्। यथा शरीरस्य रक्षायै उचितं भोजनं, उचितश्च व्यवहारः आवश्यकतोऽस्ति तथैव यारीरस्य स्वास्थयाम व्यायामः अपि आवश्यकः अस्ति। शरीरायास जननं कर्म व्यायाम संज्ञितम् कथयते। व्यायामत् श्रमजनितं शैथिल्यम् पिपासा तापः शीतादिनां सहनं कर्तुम् क्षमता आरोग्यं च उपजायते। वार्धक्यं व्यायामभिरतस्यः समीपं सहसा न आयति।

यथा- गरूणस्य समीपं सर्पाः न गच्छन्ति एवमेव व्यायामिनः जनस्य समीपं रोगाः न गच्छन्ति। व्यायामः वयोरूपगुणहीनम् अपि जनम् स्वस्थं करोति अतः सदैव व्यायामः कर्त्तव्यः। यदा मनुष्यः सम्यक् रूपेण व्यायामं करोति तदाः सः सर्वदा स्वस्थः तिष्ठति। अनेन असुन्दराः अपि सुन्दराः भवन्ति। व्यायामेन सहशं किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणं नास्ति। व्यायामं कुर्वतः वरूद्धमपि भोजनं जीर्यते। अर्धबलेन व्यायामः कर्त्तव्यः। रिपवः व्यायामिनं न अर्दनं कुर्वन्ति। नित्यं प्रतिदिनं रिक्तं उदरं व्यायामः करणीयः आत्महितैषिभिः व्यासयामः क्रियते यतोहि जनैः व्यायामेन कान्तिः लभ्यते, शरीराणां शारीरिकं सौष्ठवम् जठराग्नेः प्रवर्धनम्, व्सच्छीकरण च व्यायामेन सम्भवति। अतः व्यायामं समिक्ष्य एव कर्त्तव्यम् अन्यथा वयाधयः आयान्ति।

❑❑

षष्ठः पाठः—सुभाषितानि

स्मरणीय बिन्दु

संस्कृत कृतिनाम् याः पद्याः पद्यांशेषु वा शाश्वतं सत्यं अत्यन्त मार्मिक रूपेण प्रस्तुतं अकरोत्। तान् पद्यान् सुभाषितं कथ्यते। प्रस्तुते पाठे दश सुभाषितानां संग्रहं सन्ति। याः संस्कृतस्य अनेकात् ग्रन्थात् संकलिताः सन्ति। एषु श्लोकेषु परिश्रमस्य महत्वं क्रोधस्य दुष्प्रभावः सर्वेषाम् वस्तूनाम् उपादेयता बुद्धेः विशेषता इत्यादयः विषेयेषु प्रकाशं अप्रकटयन्।

यथा प्रथमे श्लोके शरीरस्य आलस्यं परित्यज्य श्रमस्यमहत्वं द्वितीये गुणवान जनस्य विशेषता, तृतीये कार्यस्य लक्ष्यस्य प्राप्ति, चतुर्थे बुद्धयः जनाः पंचमे नराणां शत्रुः क्रोध यः शरीरं नष्टं करोति, षष्ठे समानशील व्यसनेषु मैत्रीभाव सप्तमे फलछायायुक्तः महावृक्षस्य विषये, अष्टमे शब्दान् विचार्य चदनम् नवमे महान्तः जनाः सर्वदैव समप्रवृतयः भवतिन्त, दशमे च अस्मिन् विचित्रे संसारे किञ्चित् निरर्थकं नास्ति, सर्वाषाम् उपयोगिताः सन्ति। यथा अश्वः चेत् धावने वीरः तर्हि भारस्य वहने खरः वीरः अस्ति।

❑❑

नवमः पाठः—सूक्तयः

स्मरणीय बिन्दु

प्रस्तुत पाठे संग्रहीतां: श्लोकः मूलरूपेण तमिल भाषायाम् रचित् 'तिरुक्कुरल' नामक ग्रन्थात् उद्घृताः सन्तिः। तिरुक्कुरल साहित्स्य उत्कृष्ट रचना अस्ति। इदम् तमिल भाषायाः 'वेद' मन्यते। अस्य प्रवर्त्तकः तिरुवल्लुवरः अस्ति। अस्य कालः ईशवीयाब्दस्य अस्ति। एषु श्लोकोषु सफल मानवाः जातोः कृते जीवनोपयोगी सत्यं प्रतिपादितं । तिरु शब्द श्रीवाचकः अस्ति। तिरुक्कुरल शब्दस्य अभिप्रायः अस्ति। 'प्रियायुक्तंथक। अस्मिन् ग्रन्थे धर्म, अर्थ का संज्ञकाः जयः भाषाः सन्ति। त्रयणां भागायां पद्यसंख्या 1330 अस्ति।

अत्र प्रथमे श्लोके जनकेन सुजाय शैशवे विद्याधनं दीयते। सरलता यथा मनसि तथा वाचि अपि भवेद। बुद्धिहीनः जनः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं खादति। संसारे विद्वासं ज्ञानचक्षुभिः नेत्रवन्त कथयन्ते। तत्वार्थस्य अनिष्टं न कुर्यात्। आचारप्रभवोधर्मः सन्तश्चाचारलक्षणां :। विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम् इत्यादयः सूक्तयः संग्रहीताः सन्ति। समस्ताः श्लोकः सरसः सरलः भाषायुक्तं प्रेरणापदं च सन्ति।

❑❑

द्वादशः पाठः—अन्योक्तयः (केवलं पठनार्थं वर्तते)

स्मरणीय बिन्दु

अन्येषां कृते या उक्तयः कथयते ताः उक्तयः अन्योक्तयः अत्र पाठे सङ्कलिताः वर्तन्ते। अस्मिन् पाठे षष्ठ श्लोकम् सप्तश्लोकम् च अतिरिच्य ये श्लोकः सन्ति ते पण्डितराजजगन्नाथस्य 'भामिनीविलास' इति गीतिकाव्यात् सङ्कलिताः सन्ति। षष्ठः श्लोकः महाकवि माघस्य 'शिशुपाल वधम्' इति महाकाव्यात् गृहीतः अस्ति। सप्तमः श्लोकः महाकवि भर्तृहरेः नीतिशतकात् उद्धृतः अस्ति।

पण्डितराजजगन्नाथः संस्कृतं साहित्यस्य मूर्धन्यः सरसश्च किवः आसीत्। सः शाहजहाँ नामकेन् मुगलशासकेन स्वराजसभायां सम्मान्तिः। तेषाम् त्रयोदश कृतयः प्राप्यन्ते। महाकवि मासघस्य एकमेन महाव्यं प्राप्यते 'शिशुपाल वधम्" इति। महाकवि भर्तृहरेः जीणि शतकानि सन्ति, नीतिशतकम् शृङ्गारशत्कम् वैराग्यशतंक च।

यदा कश्चित प्रतीकेम माध्यमेन कश्चित् गुणस्य श्लाघा दोषस्यश वा निन्दां करोति तक्ष सः पाठकानां कृते भृशं उपादेयम् भवति।

प्रस्तुत पाठे एतादृशैव सप्त अन्योक्त्यानां सङ्कलनं सन्ति, येतु राजहसः कोकिलः मेघः, मालाकारः सरोवरः चातकस्य च माध्ययेन मानवान् सद्वृत्तयः सत्कर्मान् प्रति प्रवृन्तं भवितुम् संदेश प्रदानं अकुर्वन्।

प्रथमे श्लोके राजहंस प्रशंसा अनरोत् यतोहि सरसः शोभा राजहंसेन भवति, बकेन् नहि। द्वितीये राजहंसेन सरोवरस्य उपकार कारणस्य विषेय तृतीये मालाकारेण ग्रीष्मकाले अल्पैः जलैः अपि करूणयाः तरोः पुष्टिं क्रियते चतुर्थे पतङ्गैः अम्बरपथम् प्राप्तेयन्ते। पंचमे मानी खगः चातकस्य विषये षष्ठ श्लोके जलदाः नानादीनशाति पूर्यायत्वा रिक्ताः भवन्ति। अन्तिमे श्लोके चातकेन माध्यमेन जनं सत्कर्ताणां प्रति प्रवृत्तं भवितुम् संन्देशं

अददात्। यथा मनुष्याणां त्रयः श्रेष्ठः भवन्ति उत्तम मध्यमः अधमः च तथा एव अत्र मेधानाम् त्रयः श्रेष्ठः अकथयम् गगने हि वहवः मेघाः सन्ति, सर्वेऽपि एतादृशाः न (सन्ति) केचित् धरिणीं आडर्यन्ति, केचित् वृथा गर्जन्ति। इत्थम् त्वम् संत्रं पश्यासि तस्य तस्य समक्षम् दीनं वचनं मा ब्रूहि।

❑❑

अध्याय - 3 नाट्यांशः

चतुर्थः पाठः—शिशुलालनम्

स्मरणीय बिन्दु

प्रस्तुतः पाठः संस्कृत वाङ्मयस्य प्रसिद्धं नाटकं 'कुन्दमालायाः' पंचमात् अङ्कात् संगृहीतः अस्ति। अस्य पाठस्य रचयिता प्रसिद्धः नाटककारः दिङ्नाकाः अस्ति। अस्मिन् नाट्यांशे रामः कुशलवौ सिंहासने उपवेष्टुम् कथयति, किन्तु तौ अतिशालीनता पूर्वकं उपवेष्टुम् नहिकुरुतः। सिंहासनारूढ़ः रामः कुशलवस्य सौन्दर्येण आकृष्टं भूत्वा तौ स्वअङ्के उपपवेष्टयतः आनन्दितः भवति। पाठे शिशुस्नेहस्य अत्यन्त मनोहारी वर्णनं अकरोत्।

प्रस्तुते पाठे लवकुशभ्याम् मिलिते सति रामस्य हृदये ताभ्याम् लालसा भवति। तेषाम् स्पर्शसुखेन अभिभूतं भूत्वा रामः तौ स्वसिंहासने स्वअङ्के स्थापयित्वा लाड-प्रेमं करोति। अस्य भावस्य पुष्टौ नाटके श्लोकः उद्धृतः अस्ति—

भवति शिशुजनो वयो·नुरोधाद्

गुणमहतामपि लालनीय एव।

प्रजति हिमकरोऽपि बालभावात्

पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम्।।

गुणमहताम् अपि वयो·नुरोधात् शिशुजनाः लालनीयाः एव भवति। बालभावात् हिहिमकरः अपि पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वं प्रजति।

नाट्यांशे रामः कुशलवौ विदूषक च जयः पात्राः सन्ति। पाठे विदूषकेन् लवकुशल तियौः परिचयं पृच्छयते। परिचयं श्रुत्वा श्रीरामः विदूषकं कथयति- अनयोः कुमारयोः अस्माकं च सर्वथा समरूपः कुटुम्ब वृत्तान्तः।

भगवान् वाल्मीकिया निबद्धं पुराणपुरुषस्य कुशलवेन श्रीरामं अश्रृणोत् तस्यैव सूचयत् नेपथ्यात् कुशलवाS विना समयं नष्टं कुर्वत् स्वकत्रव्यिस्यः पालयितुं निर्देशं ददाति। उभौ रामेण आज्ञां नीत्वा गन्तुम् इच्छतः तत्रैव श्रीरामः श्लोकेन माध्यमेन तस्याः रचनायाः सम्मानं कुर्वत् कथयति।

तथाहि उभौ (कुशलवौ) इयम् कथायाः गायन्तौ तपोनिधिः पुराणमुनिः (वाल्मीकि) इयम् रचनायासः कविः अस्तिः। वसुधायाम् प्रथम अवतीर्णः गिराम् अयं काव्यं अस्ति, इयम, श्लाहया कथा सरसिरुहनाभि विष्णुना सम्बद्धः अस्ति। इत्थम् ननु एव अयम् श्रोतारः पावनं आनन्दयति च।

❑❑

एकादशः पाठः—प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्

स्मरणीय बिन्दु

प्रस्तुतं नाट्याशं महाकवि विशाखदत्तेन रचितं 'मुद्राराक्षसम्' नामकं नाटस्य प्रथमात् अङ्कात् चाणक्यः अमात्यराक्षसः च तस्य परिवारीजनानां विषये ज्ञातुम् चन्दासेन वार्तालापं करोति, किन्तु चाणक्यः अमात्यअसुरस्य विषये किञ्चित् कथयत् चन्दनदासः स्वमित्रतायां दृढ़ं भवति, तस्य मैत्री भावेन आनन्दयत् अपि सहर्षेण प्रस्तुतं भवति। इत्थम् स्वप्राणे भ्योऽपि प्रियः प्राणनाम् उत्सर्ग कर्तुम् तत्परः चन्दनदासः स्वसुहृदानिष्ठायाः एकं ज्वलन्तं उदाहरणं प्रस्तुतं करोति।

नाट्यांशे चाणक्य, शिष्यः चन्दन दासश्च मध्ये वार्तालापं भवन्ति। कुसुमपुर नाग्नि नगरे महामात्यस्य राक्षसस्य प्रियतम् पात्रं च आसीत्। सः मणिकारः श्रेष्ठी च आसीत् अस्यैव गृहात् राक्षसः सपपरिवारः नगरात् बहिरगच्छत्। रासक्षः नन्दराज्ञः स्वामिभक्तः चतुरः प्रधानामात्यः आसीत्। अस्मिन् नाटके चाणक्यस्य राजनीतिक कौशलस्य बुद्धिवैभवस्य राष्ट्रसञ्चालानार्थम् कूटनीतिन्यम् निदर्शनमस्ति। अत्र चराणक्य स्रूामात्य राक्षस्य च कूटनीतित्योः संघर्षः।

❑❑

अध्याय - 4 प्रश्न निर्माणम्

स्मरणीय बिन्दु

(1) प्रश्न बनाने के लिए अन्त में प्रश्नवाचक चिह्न (Question Mark) अवश्य लगाएँ।

(2) एक पद में उत्तर न देकर पूर्ण वाक्य में ही उत्तर दें।

(3) 'किम्' सर्वनाम के तीनों लिङ्गों में शब्द रूप के अनुसार ही प्रश्नवाचक शब्द का प्रयोग करें।

❑❑

अध्याय - 5 श्लोकान्वय

स्मरणीय बिन्दु

1. सर्वप्रथम प्रश्न के वाक्य अच्छी तरह रिक्त स्थानों सहित पढ़ लें एवं सन्धि युक्त पदों को अलग-अलग करें।
2. फिर अर्थानुसार जो शब्द वहाँ आवश्यक हो उसे ही लिखें, यदि सन्धि युक्त बड़े शब्द का कोई छोटा पद पहले ही अन्वय में हो, तो उसे पुनः न लिखें।
3. मञ्जूषा में दिए गए सभी शब्दों को सर्वप्रथम श्लोक में रेखाङ्कित करने के बाद ही उचित शब्द को रिक्त स्थान में लिखिए।

❑❑

अध्याय - 6 घटनाक्रमानुसार वाक्यलेखनम्

स्मरणीय बिन्दु

1. सर्वप्रथम छात्र घटनाक्रम को ध्यानपूर्वक पढ़ें और घटना की सम्पूर्ण जानकारी लें।
2. तत्पश्चात् पाठ की घटना / कहानी के अनुसार प्रश्न पर ही पेन्सिल से संख्या क्रम अंकित करें, जब सम्पूर्ण घटना / कहानी ठीक क्रम में व्यवस्थित हो जाएँ तभी उत्तर-पुस्तिका में अंकित करें अथवा लिखें।
3. इससे अशुद्धियाँ होने का भय नहीं रहता है। एक भी गलत क्रम से पूरा घटनाक्रम गलत हो सकता है।

❑❑

अध्याय - 7 पर्यायमेलनम् / विलोममेलनम्

स्मरणीय बिन्दु

1. छात्रों को वाक्य के रेखांकित शब्दों अथवा दिए गए शब्दों का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए। उसमें किसी प्रकार का संशय नहीं होना चाहिए। तभी आप इस प्रश्न का उत्तर लिख सकेंगे।
2. रेखाङ्कित शब्द के उचित अर्थ को विकल्पों से उचित विकल्प चुनकर या शब्दों के मेलनम् में अर्थ समझकर ही उचित शब्दों का मिलान कर उत्तर देने का प्रयास करें।

❑❑